TC/RAJ/RAJ/00095

अपरंच

राजस्थानी भासा अर साहित्य री तिमाही

जनवरी-जून 2015 (संयुक्तांक)

भासा आंदोलन विसेसांक

सलाहकार मंडल

मोहन आलोक, गंगानगर

नंद भारद्वाज, जयपुर

डॉ. आईदान सिंह भाटी, जैसलमेर

ओम पुरोहित 'कागद', हनुमानगढ़

डॉ. नीरज दइया, बीकानेर

प्रधान संपादक

पारस अरोड़ा

संपादक

गौतम अरोड़ा

संपादन सैयोग

शंकरसिंह राजपुरोहित, बीकानेर

डॉ. मदन गोपाल लढ़ा, महाजन

प्रह्लाद राय पारीक, पीलीबंगा

डॉ. गौरीशंकर कुलचंद्र, हनुमानगढ़

ओम नागर, कोटा

मुखौळ : **संज्ञा उपाध्याय** (संपादक 'कथन') दिल्ली

अंतरजाळ अंक संचालक : **डॉ. नीरज दइया** बीकानेर

टाइप सैटिंग : **भंडारी ऑफसेट** जोधपुर

साज सज्जा : **रमेश व्यास** जोधपुर

सगळा पद अवैतनिक

सदस्यता

अेक अंक रौ मोल : 30 रिपिया

अेक बरस रौ मोल : 100 रिपिया

तीन बरस रौ मोल : 250 रिपिया

आजीवन : 1100 रिपिया

इण अंक रौ मोल : 60 रिपिया

प्रकासक

अपरंच प्रकासण

A-360, सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर 342 005 (राज.)

दूरभास : 0291-2720796, 7877982810, 9413961800

e-mail : apranchrajasthani@gmail.com

web : www.apranch.wordpress.com

विगत

❑संपादक री बात

राजस्थानी भासा मान्यता आंदोलन— अबै आगै कांई ? *गौतम अरोड़ा* 3

❑पंचामरत

क्यूं इत्ता नाराज / आपरै-म्हारै बिच्चै फरक *पारस अरोड़ा* 5
डूंगर रौ हियौ / सफदर हासमी री मौत / कदमताळ *गोरधनसिंह शेखावत* 10
सैंतीस घरां रौ गांव / कांमणी / टाबर रा सवाल *नंद भारद्वाज* 15
हरी व्हेण री आस में तोप / मारग री मौत / खोट *चंद्रप्रकाश देवल* 20
दीठाव रै बेजां मांय *तेजसिंह जोधा* 24

❑भासा-विगत

राजस्थानी भासा रै आंदोलन रा आगीवांण *ओम पुरोहित 'कागद'* 28
राजस्थानी भासा री मान्यता रौ सवाल *डॉ. आईदानसिंह भाटी* 34

❑गीत

मायड़ भासा राजस्थानी *डॉ. बस्तीमल सोलंकी भीम* 39

❑कहाणी

मेळौ *राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफिर'* 40

❑अेकल काव्यपाठ

लावौ अर सबद / मजलां मारै हेलौ / मन री बात
मिरग तिसणा / नैणां रा बोल / प्रभातियौ तारौ *वाजिद हसन काजी* 45

❑बात-बंतळ

मान्यता आंदोलण नै तेज करणौ पड़ैला : के. सी. मालू गौतम अरोड़ा 48
राजस्थानी नै मान्यता इणरौ वाजिब हक : भरत ओळा गौरीशंकर कुलचन्द्र 49

❑अनुसिरजण

लीलाधर मंडलोई री कवितावां रौ उल्थौ *उल्थाकार : डॉ. नीरज दइया* 51

❑काव्य-गोस्ठी

घट्टी *मुकुट मणिराज* 56
दुस्मण दोस्त यादां *ज़ेबा रशीद* 57
अेक और सदी *हरदान हर्ष* 58

❑पोथी परख

म्हां जिकौ भेळै देख्यौ, देखजौ अबै अेकला *डॉ. नीरज दइया* 59

❑रपट 62

संपादक री बात

राजस्थानी भासा मान्यता आंदोलन— अबै आगै कांई ?

मायड़ भासा राजस्थानी रौ मानता आंदोलन सिरै चढ्यौ अर लारलै दिनां दिल्ली रै जंतर-मंतर माथै इण आंदोलन मांय लाग्योड़ी सगळी संस्थावां रै अेकठ प्रयास सूं जबरौ धरणौ थरपीज्यौ। बीकानेर सांसद अर्जुनराम मेघवाल, जोधपुर सांसद गजेन्द्रसिंह शेखावत, राजस्थानी भासा मान्यता समिति रा श्री के.सी. मालू अर माणक रा संपादक पदम मेहता इण धरणै री अगुवाई करी। मायड़ भासा राजस्थानी छात्र मोरचा अर मोट्यार परिषद आंदोलन मांय ऊरमा भरी अर धरणै माथै बडी संख्यां मांय पूग्या छात्र अर युवा आंदोलन नैं रोजगार सारू जरूरी आंदोलन रै रूप सरकार साम्हीं राख्यौ।

राजस्थानी भासा मान्यता आंदोलन रै इतिहास मांय पैली बार अेक संगठित जन आंदोलन अर जननेतृत्व, जनवादी तरीकै सूं साम्हीं आयौ अर आंदोलन अेक साहित्यिक आंदोलन री बाड़ तोड़ जन सारू मुगत व्हियौ। सरकार नै भी लखायौ कै अबै टाळ सोरी कोनी। स्यात सरकार सारू भी राजस्थानी-भोजपुरी-भोती भासा नैं मान्यता री मांग बिहार चुणाव री दीठ सूं महताऊ ही। नतीजौ कै प्रधानमंत्री अर गृहमंत्री दोनूं आंदोलनकारी पदाधिकारियां नै बगत दियौ, मिळ्या अर सरकार कानी सूं मान्यता री दिसा मांय काम करण रौ भरोसौ दिरायौ। सरकारी वादा मानसून सत्र मांय भासा मान्यता सारू संसद में विधेयक राखण सूं सरू होया। पछै चुणाव पैली केबिनेट मांय प्रस्ताव लावण री बात होयी। लारूलार केई लोग जस लेवण री खेचळ ई सरू करी। राजस्थानी रा हेताळू तै करयौ कै सरकारी बात माथै भरोसौ राखणौ है।

पण अबै, अबै आगै कांई ?

मानसून सत्र गियौ, बिगर चुणाव री तारीखां आयगी। चुनावी आचार संहिता आयगी, नीं नीं तौ विधेयक आयौ, नीं कोई केबिनेट रौ प्रस्ताव ई आयौ, नीं कोई सरकारी घोसणा व्ही। राजस्थानी भासा अेकर फेरूं राजनीति री ठगी मांय ठगीजगी। कांई सरकारी खेचळ जस री चावणा मांय फीतै रै कटण री बाट जोवै ? कांई साच्याणी कोई तकनीकी अड़चन है ? कांई सरकार दब्योड़ी आवाज मांय संयुक्त राष्ट्र री जकी बात कैवती, उण माथै कायम है ? कांई चुनावी घोसणा-पत्र साच्याणी चुणावी जुमलौ हौ ? कांई अेक राष्ट्र, अेक धरम, अेक भासा रौ सिद्धांत आपां सूं आपां री मायड़ भासा रौ हक खोसै ?

कीं व्हौ, अबै राजस्थान री जनता अर मायड़ भासा रा हेताळुवां नैं तै करणौ है कै आगै कांई ? मंच री घोसणा मुजब अनसन ! तौ कद ? आगै राजस्थान बंद ! तौ कद ?

राजस्थानी भासा आंदोलन री इण लड़ाई में राजस्थानी भासा री अेक जिम्मेदार पत्रिका होवण रै नातै अपरंच भी आंदोलन रौ हिस्सौ है। अपरंच रौ औ अप्रेल-सितंबर अंक राजस्थानी भासा मान्यता आंदोलन अंक है। आ खुसी री बात है कै भासा आंदोलन आज अेक जन

आंदोलन रै रूप विगसाव लियौ है अर राणीसा अर कन्हैयालालजी सेठिया स्यात आंदोलन रौ औ ईज रूप देवणी चावता। अंक वांनै निवण सागै समरपित।

अर जे बात 'अपरंच' री करां तौ म्हैं पाठकां सूं इण अंक मांय हुयी देरी सारू माफी चावूं, कारण पारसजी नै हृदयाघात अर वांरी अस्वस्थता है। पत्रिका काढण मांय आर्थिक अबखायां भी जबरी है। वार्षिक अर त्रैवार्षिक सदस्यां री सदस्यता खतम व्हैगी, पण घणकरां पाठक आपरै वार्षिक चंदै पछै पाछौ सदस्यता शुल्क नीं भेज्यौ है? अबै अक्टूबर-दिसंबर तांई आजीवण सदस्य बणावण री तेवड़ी है। नीचै अबार तांई रै आजीवण सदस्यां रा नांव दियोड़ा है, आगलै अंक मांय आप भी आपरौ नांव जोड़ सकौ, उडीक रैसी। आगूंच आभार।

-गौतम अरोड़ा

अपरंच रा आजीवण सदस्य

नांव	ठौड़	रसीद सं.
1. श्री रमेश उपाध्याय	दिल्ली	10
2. स्व. श्री ईश्वर चंद्र अरोड़ा	जयपुर	13
3. श्री नंद भारद्वाज	जयपुर	24
4. श्री दाऊलाल अरोड़ा	बड़ौदा	26
5. श्री चैनसिंह परिहार	जोधपुर	33
6. श्री रतन शाह	कोलकाता	34
7. श्री नारायण राहड़	सूरत	36
8. श्री सत्यप्रकाश अरोड़ा	जोधपुर	37
9. श्री मोहन आलोक	गंगानगर	41
10. श्री सूरज प्रकाश जी डाबला	पीलीबंगा	49
11. श्री फारुक आफरीदी	जयपुर	53
12. श्री नारायण सिंह पीथल	जयपुर	55
13. श्री मीठेस निर्मोही	जोधपुर	56
14. श्री मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट	जोधपुर	62
15. श्री श्यामसुंदर भारती	जोधपुर	66
16. श्री मदन गोपाल लढ़ा	महाजन	70
17. डॉ. अर्चना शर्मा	चूरू	--
18. श्री रामचरण परिहार	जोधपुर	196
19. डॉ. भरत ओळा	हनुमानगढ़	71

● *पंचामरत : अेक*

पारस अरोड़ा

सन् 1937 में राखी रै दिन अजमेर में नानाणै जलम। आपरी कवितावां जुलम, अन्याव अर झूठै दिखावै रै खिलाफ आम आदमी री आवाज बण'र उण सूं जुड़ै। मिनखाजूण री हिमायत करतां वै पाखंड अर जुलम रै सांम्ही अेक मजबूत पख री सिरजणा करतां उणसूं आपरौ जुड़ाव थरपै। 'जाणकारी', 'दीठ' अर 'माणक' रै संपादन सूं जुड़्या अर 'अपरंच' रौ संपादन-प्रकासण करै। आपरौ उपन्यास 'खुलती गांठां' खासौ चावौ हुयौ। 'झळ', 'जुड़ाव' अर 'काळजै में कलम लागी आग री' कविता-संग्रै छप्योड़ा। हिन्दी कवि मंगलेश डबराल रै कविता-संग्रै 'हम जिसे देखते हैं' रौ राजस्थानी में 'म्हां जिकौ देखां' रै नांव सूं उल्थौ कियौ, जिकौ साहित्य अकादमी, नई दिल्ली सूं छप्यौ। हिन्दी कवि राजेश जोशी री लंबी कविता 'समरगाथा' रौ राजस्थानी उल्थौ ई छप चुकौ है। उपन्यास 'खुलती गांठां' नै विष्णु हरि डालमिया पुरस्कार अर कविता-संग्रै 'जुड़ाव' नै राजस्थानी ग्रेजुएट्स नेशनल सर्विस एसोसियेशन (बम्बई) रौ पुरस्कार मिल्यौ। राजस्थानी भासा, साहित्य अर संस्कृति अकादमी, बीकानेर सूं विशिष्ट साहित्यकार सम्मान ई मिल्यौ।

ठिकाणौ : अे-360, सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर-342005

क्यूं इत्ता नाराज

इत्ता नाराज क्यूं हौ बापू
जे म्हैं नीं मानी थांरी बात
गयौ परौ
थांरै बरजतां थकां ई बारै
लारै
थे उडीकता रैया म्हारी बाट।

कुण कियौ आकास इत्तौ बदरंग

दिसावां
क्यूं आपरी ओळख गमाय दी
क्यूं फेर जमीं
पांणी बदळै लोही री मांग करै ?

थे आरां उत्तर नीं देय सकौ
परवा नीं,
म्हैं बिना उत्तर नीं रैय सकूं।

जे म्हैं गयौ परौ
गरम हवा
अर धारदार हालात साथै
गस्त लगावतै
खतरै साम्ही / मुकाबलै सारू / मित्रां साथै
उकेरतौ सवालां रा जवाब
तौ क्यूं उदास आंगणै
थे बेराजी ओढ अबोला व्हेगा।
थे इज कैवता
वां दिनां / उण बगत / नीं सुणी
किणी री थे
अर निकळगा हा बारै
आपरी जमीं / आपरै आकास री
घोसणावां करता
नरभक्सी, अंधारी दिसावां रै मांय
लारै थांरी बाट जोवती रैयी
घर री थळी
तूटोड़ी मचली नीचै फाटोड़ी जूत्यां
अेकांनी उदास पड़्यौ
टाबर रौ गाडूल्यौ
तद सुणौ कोई री थे
मानी किणी री ?
फौलाद सूं बत्तौ मजबूत व्है आदमी
दावानळ सूं बत्ती तेज व्है, अंतस री लाय
थे साबित करी

भोटा पड़गा दमन रा तमाम हथियार
थां लोगां सूं टकरीज'र
पाछा पड़ण लागा हा, साही घोड़ां रा पग
थांरी अगन-झळ में अपड़ीज'र
खतरौ उण बगत ई कम नीं हौ
सूखगी ही कटोरदान मांयली रोटी
दुखियारण रसोई में सोयगी ही
थांनै देवण साय झरूंटिया मंडाय'र ई
दोय पाका बोर लियोड़ौ
सोयगौ हौ म्हैं / थांरी बाट उडीकतौ
दादोसा री मारग मुखी आंखियां
नीं झपकी ही सारी रात।
हाल ई / भर-सरदी देखूं थांनै टसकता
उण रात जिण विध थे झेल लिया बार
पसवाड़ा फेरण लागै वा जूंनी मार
उण बगत थे
सगळा रिस्ता झाड़-झटक
गया परा बेलियां रै लार।
पच्छै, इत्ता नाराज क्यूं हौ बापू
जे म्हैं नीं मांनी थांरी बात।

म्हांरी बात / म्हांरी जमीं / म्हांरै आकास सारू
देखौ बापू
इण बदरंग व्हियोड़ै थांरै आकास सारू
गयौ परौ काटीज्योड़ै फौलाद रा
छिलका उतारण
लेय रंदौ
बणा टोळौ
गुण-अवगुण थांरा पाळतौ
रैवूं म्हैं चालतौ
धरौ
धरौ म्हारै मोर थांरौ हाथ
बापू, इणमें नाराजगी री किसी बात।

आपरै-म्हारै बिच्चै फरक

घणौ फरक है श्रीमान
आपरै अर म्हारै
अेक रिपियौ खरच करण में।

आप भार हळकौ करौ
म्हारै रिपियौ भारी पड़ जावै।
फरक पड़ै चीजां नै
अेक निजर देखण में।
पुसप री सुगंध लियां पछै ई
आप पुसप रै बारै व्हौ
अर म्हैं मांयनै
आघा रैय'र ई
दूजां रै निजू में
सैंध मारता व्हौ
अेक सरीर
कित्ता घरां माथै पसार'र रैवौ।

हरेक जरूत
आपरी मुट्ठी में बंद व्है
म्हारी व्हौ के आपरी
हरेक चीज
जांणै व्है आपरै बाप री।

स्याही बिखेरता उचपळा टाबर ज्यूं
दुनिया रै गोळै माथै आप
बिखेरता रैवौ खून अर म्हैं
म्हारी फाटोड़ी कमीज सूं
उणनै पूंछतौ रैवूं।

बडौ फरक है श्रीमान
आपरै अर म्हारै
सोचणै-समझणै अर
बोलणै-बतळावणै में।

क्यूं, क्यूं आपरी भासा
हरेक बगत गाळी रौ अरथ देवै
म्हारी भासा अरथ सेवै!
सौख व्है आपरौ सोच
म्हारै सोच में फिकर भेळी रैवै,
आपरै समझण नै कीं नीं रैयौ
म्हैं आपनै समझ रैयौ हूं,
थाक्या ई नीं आप
बेवजै बोलणै सूं
म्हारी बोलण री बारी ई नीं आई।

आप चीजां नै
लगातार बेकार कर रैया हौ
म्हारी हद सूं
घणी बारै कर रैया हौ।
आप अबै बिसांईं खावौ
चुप व्है जावौ!

अबै म्हैं बोलूंला
अर आप सुणोला
म्हैं करूंला
जिकौ आप देखोला
घणा दिन याद राखोला!

देखणौ अर समझणौ
बोलणौ अर बतळावणौ
तोड़णौ अर घड़णौ
सहेजणौ अर संवारणौ
जीवण री अेक कला है श्रीमान
जिकी आपनै अजै सीखणी है
अर म्हैं आपनै सिखावूंला।

घणौ फरक है
आप में अर म्हारै में।

⌘⌘

● पंचामरत : दो

गोरधनसिंह शेखावत

सन् 1943 में झुंझनूं जिलै रै गांव गुड़ा में आपरौ जलम हुयौ। आधुनिक राजसथानी कविता में नुंवै रचनाबोध रा चावा-ठावा कवियां में सूं अेक। ग्रामीण जीवन री विसंगतियां अर आथड़ नै आपरी कवितावां में उजागर करी। वांरी संवेदना सदा बगत सूं बाथेड़ा लेवता आदमी सूं जुड़ियोड़ी रैयी। आप बरसां लक्ष्मणगढ़ रै तोदी कॉलेज रै हिंदी विभाग में प्राध्यापक अर अध्यक्ष रैया। 'किरकिर', 'पनजी मारू', 'खुद सूं खुद री बातां' कविता-संग्रै रै अलावा 'तीसमारखां' अर 'बस्तीराम' (नाटक), 'अेक फौजी शहीद' (उपन्यास) छप चुका है। हिन्दी अर राजस्थानी में सोध-आलोचना री अनेक पोथ्यां ई प्रकासित व्है चुकी है। राजस्थान रत्नाकर, दिल्ली सूं सम्मानित। राजस्थानी भासा, साहित्य अर संस्कृति अकादमी, बीकानेर सूं विशिष्ट साहित्यकार सम्मान। दूजी केई संस्थावां सूं सम्मानित।

ठिकाणौ : न्यू रोडवेज डिपो रै सांम्ही, सीकर (राज.)

डूंगर रौ हियौ

अबकै खूब
गाज्या बादळ
अर डूंगर रै माथै थमग्या
अबकै खूब किड़की बिजळी
अर डूंगर आंख्यां मींच'र
काठौ रैयग्यौ
ठाडी बिरखा सूं
उणरौ पोर-पोर भीजग्यौ
    ल्यौ
    खूब उग्याई घास
    गोडा सूदी
    गाय-ढांडां रै
    हुयगी मौज
    हरख्यौ हुयगौ

गुवाळिया रै हिरदै
हरख उमड़्यौ
अब डूंगर में
टूंकाळ्या चढ बोल्या मोर
अलगोजां सूं गूंज्यौ
आखौ भाखर
चकरी री दांईं
नाची धरती
आमूला, गंगेड़्या
अर गूलर सूं
लदपद हुयगा सगळा बिरछ
टाबरां रै
चढग्यौ कोड
बैवतै नीझर में न्हावण रौ
अर मीठा खडुल्या
खावण रौ
जीव-जिनावर
सगळा ढूक्या डूंगर कांनी
अबकै खूब हुई बिरखा
अर जोर सूं उतर्‌या नाळा
पण फेरूं भी
डूंगर रौ हियौ
खाली रौ खाली रैयगौ।

सफदर हासमी री मौत

थारौ नीं दोस
सफदर
थारौ नीं
इतिहास रै पोड़ा मांय
ईंयां ई धधकता रैया
अगनी कुंड
अर ईंयां ई जोतां रै
च्यानणै में
अडिग रैया मोटा भाखर

हाथ टूटता रैया
मूरत घड़ीजतै कारीगरां रा
तीखा सबदां रै नस्तर माथै
ईंयां ई उठता रैया तूफान
अर मचता रैया घमसांण

बरसतौ रैयौ खून
जमीन रै काळजै में
धूजता रैया पग
नीलै आभै रा
रोही री सूनियाड़ में
बाजता रैया बाजा
कुदरत री झोळी सूं
फूंकारता रैया काळा नाग
लीलतौ रैयौ बखत
सांच री ऊगती छींयां नै
अर तसवीरां जड़ती रैयी
फूलां री मैकार

आदम जुग सूं
हुवतै इण जुद्ध रा सिपाही
सफदर, नीं मिटै
थारी मौत रा मांडणा
नीं भूलै थारै
'हल्ला बोल' री पीड़
जुग-जुग तांईं

जद भी तणसी मुक्की
जद भी हुवैली
आंख्यां लाल
जद भी उठैली
हक री बात
सफदर!
थूं आतौ रैवैलौ याद
ईंयां ई ईंयां

थारौ नीं दोस
सफदर! थारौ नीं
म्हैं सांच कैवूं।

कदमताळ

म्हैं खुद कैवूं
तोड़ौ ईं भरोसै रै डूंगर नै
ईं रै माथै चढतां-चढतां
गोडां रै मांय
पाणी भरीजगौ

आं सबदां रा
अब अरथ पलटौ
आंरी स्यांणप सूं
घणी नफरत
हुवण लागी
क्यूंकै अै सबद
घणा चालाक हुयगा

अब हरेक री
चरितकथा नै समझणै रौ
बखत नीं
खून रै इतिहास नै
काटौ
जठै लग थे काट सकौ
सांची मानौ
मत राखौ
आं उणियारां सारू हेत
सेवट
चोखौ है आं सूं परै रैवणौ
वडेरां री लीक माथै
चाल'र बडा नी बणोला
थे फालतू में
मुरदा भोम रा
नुंवा अरथ खोजणौ चावौ

थांनै
सांच कैवूं
छेड़ा हटजावौ
अळगा-साव अळगा
कांईं थांरै
पसीनै में ताव नीं

संकळप नै
धोबा सूं उछाळौ
सुरू करौ अेक जातरा
बिना पीठ ठोक्यां

म्हैं अब भी कैवूं
आं बारणा-दरूजां सूं
अै पग मोड़ौ
डूंगर री बरोबरी
नीं सही
नाळा रौ खूंखाट
साव आपरौ है
पछै नाळौ बैवतौ
नदी में मिलै या
बिचै सूख जावै

कीं म्हारी बात रौ ई
भरोसौ करौ
गैलायां छोडौ
सज आवै ज्यूं
घोड़ै सवार हुवौ
म्हैं तौ आई
कैय सकूं हूं
मत करौ कदमताळ
म्हारा भंवर
मत करौ कदमताळ
अेक ई ठौड़।

⌘⌘

● *पंचामरत : तीन*

नंद भारद्वाज

1 अगस्त 1948 नै बाड़मेर जिलै रै गांव माडपुरा में जलम। आप राजस्थानी अर हिन्दी, दोन्यू भासावां में गद्य अर पद्य री अनेक विधावां में लारलै चाळीस बरसां सूं निरंतर लिख रैया है। आकाशवाणी अर दूरदर्शन रा वरिष्ठ अधिकारी रैया। आप सामाजिक सरोकारां अर लोकतांत्रिक मान-मोल रा प्रबळ हिमायती रैया। तीन बरसां तांई राजस्थानी री चावी पत्रिका हरावळ रा संपादक रैया। पोथी रूप राजस्थानी में 'अंधारपख' (काव्य), 'दौर अर दायरौ' (आलोचना), 'सांम्ही खुलतौ मारग' (उपन्यास) अर 'बदळती सरगम' (कहाणी-संग्रै) छप चुका है। हिन्दी में केई पोथ्यां छप्योड़ी। नेशनल बुक ट्रस्ट सारू राजस्थानी कथा संकलन 'तीन बीसी पार' रौ संपादन अर साहित्य अकादमी सारू 'आधुनिक भारतीय काव्य संचयन : राजस्थानी' रौ अनुवाद अर संपादन। आपनै साहित्य अकामी पुरस्कार, मारवाड़ी सम्मेलन मुंबई रौ सर्वोत्तम साहित्य पुरस्कार, राजस्थानी भासा, साहित्य अर संस्कृति अकादमी रौ नरोत्तम स्वामी गद्य पुरस्कार अर के.के. बिड़ला फाउंडेशन रौ बिहारी पुरस्कार मिल चुका है।

ठिकाणौ : 71/247, मध्यम मार्ग, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.)

सैंतीस घरां रौ गांव

सैर रै पसवाड़ै
सूधै जीवण रौ परियांण
सिरकतौ सींवां सोधै—
अेक सैंतीस घरां रौ गांव
चौगिड़दै सूनियाड़ पड़ी है
बधती आबादी री अबखाई
अठै सूती खुरड़ाटा भरै,
धिराणी सगळै दिन बैठी—
थूक बिलोवै—
कंवळै पर उडीकता टाबर
गिरण करै—
—मां भूख मरां।

धिराणी भूजै
अर दुरकार करै—
अबोला मरौ अघोरयां।
(क्यूं लाज गमावौ?)
रम्मौ नीं बारै जाय'र,
दिनूगै पैली काम करां
या भूख मरां?

काम।
सगळै दिन काम-ई-काम
काम रौ कांई नांव
कब्बर खोदणौ भी काम है
अर बूरणौ भी काम—
आ ई कैया करै
औ सैंतीस घरां रौ गांव।

कांमणी

थूं—
म्हारै वहेणै रौ आधार
आधी सामरथ
आधी निबळाई
जीवण रौ आधौ सार—

थूं पसरयोड़ी कंवळी माटी
तालर में पांघरती
काची दूब रै उणियार
रूंखां री लीली ओप
थूं आभै री पुड़तां में तिरती बादळी
कांठळ में काटकती-खिंवती बीज
धोरां अर चरणोयां माथै
धारोळां औसरतौ ठाडौ नीर
थूं नेह सूं भरियोड़ी नाडी
बावड़ी

थूं विगतां अर गीतां री आधी बात
वौ आधै हेलै सूं पैली आवणौ!
वा माईतां री ऊंडी झीणी सीख
अगनी री झाळां तपियोड़ी कंचन-कांमणी,
ऊमावै हामळती नुंवी जिनगाणी रौ बोझ
ओकळियां ऊतरती आई
हेताळू रै आंगणै—
सांभी थूं अबखै जीवण री ढीली डोर
आबळ बंधाई माठै मारगां,
अंधारै जगायां राखी आस
पोखती रही बीखरतै कुळ रा कायदा!

बरसां अर ऊमर री आडी घाल
थूं कठीनै सिधाई सोरठ-सोवणी
कठीनै अदीठ व्हियौ थारौ आधोचार
क्यूं लागै बिलखी तरुणापै तीजणी!
क्यूं बधती लागै
पगां हेठली जमीं माथै भार—
आ म्हारी मांयली मार
थूं किण हीलां सूं बणगी म्हारी
कांमणी!

धरम री पोथियां कैवै
थूं बणगी मिंदर री पूतळी
सरधा अर भगती में थारी
बुझगी अंतरजोत
माळीपानां में छिपग्यौ दीपतौ उणियारौ,
ख्यातां में सोध्यां
लाधै न्यारी ई साख
रीत रा गीतां में चावौ रूसणौ!

किण दावै अंगेजूं थारी आंण
किण बूतै बचावूं ऊघड़ती आबरू
म्हारी बाथां तांई पूग
थूं कठीनै अलोप व्हेगी नार

थनै सोधतौ भटकूं
म्हैं ऊजड़ में उरभाणौ!

औ च्यारूंमेर
हाकां-दाकां हालतौ संसार
आ समदर में हिबोळा खावती
बेपतवारी नाव
औ बेकळू री थाग में
ऊतरतौ अबखौ पंथ,
आ काळ सूं कूटीजियोड़ी भोम
औ टोपां-टोपां सांगळतौ
अखूट जुलमी अंधारौ
आ सूंसाड़ा करती रात
औ आंधी अर बत्तूळां सूं
बाथेड़ा करतौ म्हैं
म्हारा पगां पूगती आव
म्हारी मानेतण!
अंतस में अंगेज ऊंडी दाझ—
—गाज!
कै बदळै ऊजड़ रौ आगोतर
जिनगाणी रौ सुरंगौ बाजै साज
सिरजां सांसां में नुंवी जीवारी!

टाबर रा सवाल

अबखा अर अबोट सवालां में
अणजाण्यां हाथ घालणौ
टाबर री आदत व्है—
आगूंच वौ अंदाजै कोनी
अबखाई रौ अंत
अर थाग लेवण उतरतौ जावै
अंधारी बावड़ी री पेड़ियां!

टाबर रा वां अणचींत सवालां रौ
वौ कांई पडूत्तर देवै

जिका आभाचूक हलक सूं बारै आय
ऊभ जावै सांम्ही अर
हालात सूं बाथेड़ौ करण री हूजत करै

जीसा!
आपां नै क्यूं देखणौ पड़ै
कोई रै मूंडै सांम्ही,
क्यूं ऊभणौ पड़ै राजमारग रै अेड़ै-छेड़ै
बोलां कोई री अणूंती जै-जैकार
अर क्यूं कदेई अबोला बैठणौ पड़ै
आपां नै इंछा परबारै?

कैड़ी अणचींती दुविधा है
अेकांनी टाबर री भोळी इंछावां
स्यांणी संकावां
अलेखूं कंवळा सपना
अर बापरती काची नींद,
दूजै कांनी आ कुजरबी
परबसता री पीड़—
उणरी आंख्यां सांम्ही घूमै
टाबर री इंछावां
अर सवालां सूं जूंझै उणरौ मन,

सेवट धूजता पग
चाल पड़ै मत्तै ई उण गेलै
जिकौ अेक अंतहीण जंगळ में
गम जावै—

कानां में फगत गूंजती रैवै
टाबर री धूजती आवाज
थे यूं अणमणा कठीनै जावौ जीसा!
दोफारां आपां नै सै'र जावणौ है—
म्हनै आजादी री परेड में साथै रैवणौ है,
थे यूं अबोला कठीनै जावौ जीसा?

⌘⌘

चंद्रप्रकाश देवल

उदयपुर जिलै रै गांव गोटीपा में 14 अगस्त, 1949 रै दिन आपरौ जलम हुयौ। राजस्थानी री अनेक विधावां में आप सिरजणा भासा री साख बधावण रौ काम कियौ। 'पागी', 'कावड़', 'मारग', 'तोपनामा', 'राज-विजोग', 'उडीक पुरांण', 'झुरावौ', 'हिरणा, मून साध वन चरणा' अर 'तीजौ अयन' आपरा काव्य-संग्रै। हिन्दी में ई 'आर्त्तनाद', 'स्मृतिगंधा', 'अवसान' अर 'बोल माधवी' काव्य-संग्रै प्रकासित व्है चुका है। इणरै अलावा भारतीय भासावां रा केई चावा रचनाकारां री पोथ्यां रै अलावा सेम्युअल बैकेट रै नाटक 'वेटिंग फोर गोदो' अर दोस्तोवस्की रै 'क्राइम अेंड पनिसमेंट' रौ राजस्थानी में अनुवाद कियौ। सूर्यमल्ल मीसण रै चंपू महाकाव्य 'वंश भास्कर' रौ संपादन अर प्रकासण कियौ। 'पागी' नै साहित्य अकादमी पुरस्कार मिल्यौ। राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर सूं मीरां पुरस्कार, राजस्थानी भासा, साहित्य अर संस्कृति अकादमी रौ सूर्यमल्ल मीसण शिखर पुरस्कार अर दूजा केई मान-सम्मान मिल चुका है।

ठिकाणौ : 74, बलदेव नगर, माकड़वाली रोड, अजमेर (राज.)

हरी व्हेण री आस में तोप

खसमांखांणी तोप नै इचरज व्है
जद उणनै ठाह पड़ै
कै उणरै दांत छोड बत्तीसी ई कोनी
इण नवा अेलम रै पांण
वा आपरै बोखै मूंडै सूं मुळकै।
मन रौ औ बोझ ओछौ पड़्यां
वा दिन रा ई सपना देखै।
जांणै हांपौ चरावता गवाळिया
जिका म्हनै घोड़ौ जांण सवारी करै
म्हारौ गळौ पकड़ लटूंबै
वै म्हनै अछूत नीं गिणै।
उणरै हांचळा पांनौ आवूं-आवूं व्है
उणरी इंछा है आ अेक निकेवळी

कै किणी दिन
आं मांय सूं कोई छोरौ
लुक-मींचणी रमतौ
म्हारै मांय लुक जावै
तौ म्हैं ई डाकण
आपरी सरजीवण कूख रै भरम
मां गिण परी खुद नै
मुगत व्है जावूं!
पीळौ ओढण री ओसियाळी
म्हैं दवागण
अेकर हरी व्है जावूं
बळबळता गोळा जणती थाकगी हूं।

वा आपरा बोखा बाका री गळाई
आपरी कूख फाड़्यां
अवचल उडीकै है
मनोग्यांना।
सूती-सूती ऊभ-छठ करती
अबोली
गढ री परकेमां में
कदास, उणरी मनजांणी व्है।

मारग री मौत

टंवळ्यां खावतौ
हालतौ-हालतौ मारग
जद कद ध्रोब रा पातळा पानां माथै पूगै
धूजण लागै

मारग अर ध्रोब
अेक दूजा माथै मंडण री
आफळ करता
आंम्ही-सांम्ही बदळै आपरी जूंण
कदैई विणसै ध्रोब
कदैई मारग।
पण जद तांणी

इण आवगी प्रथमी माथै
रेवैला बच्योड़ी कठैई
कोई चिड़कली
वा हरमेस ध्रोब री साख भरैला
अर प्रथमी मारग री

चिड़कली अर पहुमी
अै दोनूं नीं मरै कदैई
अेकणसागै।

खोट

गलती उणरी
कै लोग-बाग उणरी आंख्यां में
क्यूं हेत'र अपणांस री अेक पातळी नंदी निरखता

गलती उणरी
कै सुण उणरी बात
क्यूं ढळ जावती हेम लोगां रै कांनां
क्यूं वनी रा सुसिया-हिरण कर लेवता
आपरा कांन ऊभा,

गलती उणरी
कै उणरै बोल्यां
क्यूं खिल जावता पुसप ई पुसप
क्यूं चिड़कल्यां उणरै साद सूं साद लैय
आपरी चूं चूं उगेरती
सरासर गलती उणरी
कै भाईलोग उणनै
क्यूं वांरै मांयलौ इज अेक गिणता
हळाबोळ गफलत
कै वौ अैड़ौ क्यूं हौ ?
उणनै जैड़ौ व्हैणौ चईजतौ
वैड़ौ नीं व्हैय वैड़ौ क्यूं हौ
क्यूं वौ बायरी'र चांदणी माफक
सगळां नै लागती

अेक सिरोळी हेमांणी
गलती उणरी
कै क्यूं उणरा सुकन गिणता मिनख
क्यूं उण धंधाबायरा रै मिल्यां डावी-जीमणी
लोग सरू करता आपरौ धंधौ।

गलती उणरी
कै क्यूं वौ सगळां जैड़ौ व्हैय
सगळां सूं न्यारौ हौ।
इण 'क्यूं' माथै पड़ी दीठ
अचाणचक अेक दिन
अेक कवि री
उण सिरजी अेक कविता
इण 'क्यूं' रै आसंग-पासंग

वौ जीवतौ जागतौ पूरमपूर मिनख
कवियां मांय रोड़िज्यां केड़ै
व्हैय 'र रैयग्यौ फगत अेक पात्र
अेक ठैरज्योड़ी छिब
ओपमावां ई ओपमावां सूं लकदक
अेक ओपमा व्हैग्यौ
सुजांण पाठकां लग पूगतां
वौ कांई सूं कांई व्हैग्यौ,

वौ व्हैग्यौ अेक सोच्योड़ौ 'र
सिणगारयोड़ौ साच
इण साच नै सुण 'र
पाछौ सोचियां उण लग नीं पूगीजै
कविता रा बीज सूं
उण गत रौ रूंख बण नीं ऊगीजै

कोयनी आपां रै टैम मांय खोट
गलती उणरी
कै वौ वैड़ौ क्यूं हौ
नीं व्हैवा जैड़ौ क्यूं हौ।
⌘⌘

● *पंचामरत : पांच*

तेजसिंह जोधा

आपरौ जलम 7 जुलाई 1950 नै हुयौ। बगत रै साथै बदळता जीवन रा मान-मोल नै आपरी कवितावां रै जरियै सांम्ही लाया अर राजस्थानी री नुंवी कविता रा आगीवाण कवियां में अेक। आपरी लंबी कवितावां सूं अेक न्यारी'ज ओळख बणाई। 'राजस्थानी— अेक' अर 'दीठ' जिसी पत्रिका सूं अेक नुंवी दीठ री सिरजणा करी। सोध पत्रिका 'परंपरा' रै हेमाणी अंक में आधुनिक राजस्थानी कविता री गैराई सूं पड़ताल करी। राजकीय महाविद्यालयां में प्राध्यापक अर विभागाध्यक्ष रैया। पोथी रूप 'ओळूं री ओळियां' छपी। कीं पत्रिकावां में लंबी कवितावां छपी।

ठिकाणौ : गाव-रणसीसर, वाया डीडवाणा, जिलौ-नागौर (राज.)

दीठाव रै बेजां मांय

दो पग
दाब्यां जावै है रग-रग
आं ध्वनि-बिहूण गतां रै बिचै सूं
लगोलग
लगोलग
नैड़ी, नैड़ी, नैड़ी आवतोड़ी थूं
पेट री लाय भुगतै मां
म्हैं जीवण री जुगत जोडूं

औ डील
तर-तर सूंतीजतौ डील
अै हाथ
तर-तर छाती पर आता हाथ

अेक धूज
घांटी
खुद रै ई बोझ सूं पड़तोड़ी
अै आंख्यां
कठैई सैंचन्नण में चिमकी लेतोड़ी

अेक लखांण
कै अळगै तांई आगै-लारै मां
अेक लखांण
कै अळगै तांई अेड़ै-छेड़ै मां
अेक लखांण
कै अळगै तांई ऊपर-नीचै मां
अेक लखांण
कै ऊठती मां
कै पड़तां-आखड़तां मां-मां
थूं दीठाव सूं बेजां बारै ही
म्हैं दीठाव रै बेजां मांय हौ।

मां!
म्हैं थनै सांभी हूं मां
घणी-घणी वार
किणी ढाळ में सुर री आंट
कै जठै, सै कीं तिसळ्यौ-तिसळ्यौ
कै संभ ज्यावै
मूंडै री उण मरोड़, जिकी रोवण सूं पैली आवै
आंगळी री आंख रै उण उणमान
जिकौ पगां ल्यावै
म्हैं थनै पैरी-ओढी हूं मां
केई-केई वार
जीयां कै सीयाळै टाबर
फूलालैण रै अस्तर आळी गूगी
हाथ-पगां रा मोजा
अंवेरी हूं थनै
जीयां कै टाबरपणै काच रा कंडा

झींटियै री बात
बधरयोड़ी चूड़्यां, बिलिया अर पांखां
बस मां
औ कीं पैरणौ-ओढणौ
सांभणौ-अंवेरणौ ई तौ म्हारै सारै हौ
थूं दीठाव सूं बेजां बारै ही
म्हैं दीठाव रै बेजां मांय हौ।

मां!
वौ कैड़ौ सपनौ हौ मां
कै जिकौ थनै, ढळती रात रा लड़गौ
तद, जद म्हैं गरभ हौ
अेक अटपटाटी रै मांय तै व्हैतोड़ौ

मां!
कीं अैड़ौ ई तौ हौ वौ सपनौ
कै जिणरौ जिकर
थूं निरा दिन पछै तांई करती रैयी
सपनौ
कै जिण में
अबखी रिंद-रोह्यां लाग्योड़ी लाय
थूं म्हनै ऊंचायां, घींसतां भागती जाय
थारौ औ सपनौ
मां,
थूं दीठाव सूं बेजां बारै ही
म्हैं दीठाव रै बेजां मांय हौ

मां!
स्ट्रैप्टोमाइसिन रा इंजेक्शन
अेकानी मेल दै मां, अर भरोसौ राख
कै म्हैं अब सिगरेट नीं पीवूंला
थारा सीवणै री मसीन पर चालता वां पगां री सौगन
जिकां री सोजन

म्हैं सासती
म्हारी पलकां माथै अंगेजतौ रह्यौ हूं
पण बात वा ई है मां
थूं दीठाव सूं बेजां बारै है
म्हैं दीठाव रै बेजां मांय हूं

थूं पेट री लाय भुगतै
म्हैं
जीवण री जुगत जोडूं—
साव वीयां रौ वीयां
थनैं च्यारूंमेर सूं खिंवण नै खपतौ।
जीयां कै जलम तांई थूं
म्हनै भै अर विसमै रै बिचै खिंवण नै मिळी
अर म्हैं, म्हारै में
कान, नाक, आंख, जीभ अर चामड़ी री गत लिखी
मां!
थूं दीठाव रै बेजां बारै ही
अर म्हैं
दीठाव रै बेजां मांय हौ।
⌘⌘

● *भासा-विगत*

राजस्थानी भासा रै आंदोलन रा आगीवांण

ओम पुरोहित कागद

जिण भांत राजस्थानी भासा घणी जूनी है उणी भांत राजस्थानी भासा रौ मानता आंदोलन पण जूनौ पड़तौ जाय रैयौ है। राजस्थानी भासा री मानता रौ आंदोलन आजादी सूं पैली ई सरू होयग्यौ हौ। मानता आंदोलन रौ पैलड़ौ संख 21 फरवरी 1925 में 'तरुण राजस्थान' अखबार में स्वतंत्रता सैनाणी अर पैलड़ा मुख्यमंत्री जयनारायणजी व्यास बजायौ। इण रै बाद सन् 1944 में आज रै बंगलादेश रै दिनाजपुर कस्बै में ठा.रामसिंहजी री अध्यक्षता में अखिल भारतीय राजस्थानी साहित्य सम्मेलन रौ बडौ जळसौ होयौ। इण जळसै में राजस्थानी भासा माथै 56 पेज रौ परचौ पढीज्यौ। इण सम्मेलन में राजस्थानी भासियां री अेकता अर भासा री मानता रा प्रस्ताव पास होया जिणरौ असर आखै मुल्क में होयौ। इण सम्मेलन में रामदेव चोखाणी, तुलसीराम सरावगी, ईश्वरदास जालान, जगदीशसिंह गहलोत अर रघुनाथ प्रसाद सिंघानिया आंदोलन रा आगीवाण बण्या। 1958 में रतनगढ में राजस्थानी भासा सारू लूंठौ जळसौ होयौ। इण जळसै में अद्भुत शास्त्री, पूनमचंद बिश्नोई, सुमनेश जोशी अर किशोर कल्पनाकांत भाग लियौ अर मानता री बात उठाई । वां दिनां किशोर कल्पनाकांत रतनगढ सूं 'ओळमों' अर अद्भुत शास्त्री 'कुरजां' नांव री पत्रिका काढता। 1968 सूं 75 ताईं जोधपुर अर बीकानेर में राजस्थानी भाषा री मानता सारू घणां ई राजस्थानी सम्मेलन होया। इणी दिनां रावत सारस्वत 'मरुवाणी' पत्रिका काढी अर राजस्थानी री मानता रौ मुद्दौ उठायौ। रावत सारस्वत अर श्रीलाल नथमल जोशी 1974-75 में राजस्थानी भासा प्रचार समिति बणाई अर उणरै मारफत राजस्थानी भासा में प्रथमा, मध्यमा , विसारद अर पारखी नांव सूं परीक्षावां करवाई, जिण रा आखै देस में परीक्षा केन्द्र बणाईज्या अर हजारां लोगां अै परीक्षावां दीवी।

●

देश में 1971, 81अर 91 में हुई जनगणना में राजस्थानी भासा प्रचार समिति राजस्थान रा सगळा जिलां रै साथै साथै देस-भर में बढ-चढ'र भाग लियौ। भांत-भांत री प्रचार सामग्री , पोस्टर अर बैनर आद बणाईज्या अर बांटीज्या जिणां में अपील करीजी कै जनगणना प्रपत्र रै

मातृभासा आळै कॉलम में आपरी मायड़ भासा राजस्थानी लिखावौ। आं बरसां में जिलावार जळसा कर कर'र भी इणरौ प्रचार करीज्यौ। आं बरसां रै दौरान विधानसभा, लोकसभा अर राज्यसभा में सरकारू अर निजू विधेयक भी राखीज्या, जिणमें राणी लक्षमीकुमारी चूंडावत , लक्ष्मीमल सिंघवी, डॉ. करणीसिंह, पूनमचंद बिश्नोई, भैरोसिंह शेखावत, कुंभाराम आर्य, महाराजा गजसिंह, महाराणा मेवाड़ आद घणी ई खेचळ करी। देस-भर री अर प्रदेस री मोकळी संस्थावां मानता आंदोलन रौ झंडौ उठायौ अर धरणा-प्रदरसण कर्‌या अर जळसा-जळूस कर्‌या। दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, नागपुर, मद्रास अर देश रा दूजा स्हैरां में ई राजस्थानियां जोरदार आंदोलन कर्‌यौ। राजस्थानी भासा सारू मरणौ मांडणियां साहित्यकार माणक तिवाड़ी 'बंधु' 15 अक्टबूर 1996 नै उच्चतम न्यालय, दिल्ली में राजस्थानी भासा री मान्यता सारू एक जनहित याचिका लगाई। 1995-96 में मुख्यमंत्री भैरोसिंह शेखावत राजस्थानी भासा रै उन्नयन अर मानता सारू अेक सरकारू कमेटी बणाई, जिण रा अध्यक्ष सौभाग्यसिंहजी शेखावत नै थरपीज्या। इण कमेटी खासी खेचळ कर'र अेक लूंठौ प्रतिवेदन बणाय सरकार नै सूंप्यौ, पण वां दिनां सरकार में बैठ्या लोगां अर ब्यूरोक्रेटां बात नै सिरै नीं लागण दी। 1975-76 में ई समूळै देस में राजस्थानी भाषा नै संविधान री आठवीं अनुसूची में भेळण रै पख में प्रपत्रां माथै दस्कत करण रौ लूंठौ अभियान छेडीज्यौ। इण अभियान में राजस्थानिया जबरौ अर इत्तौ उछाव दिखायौ कै दस्कतां आळै प्रपत्रां रा गाडा भरीजग्या।

●

आज सूं 30-32 बरस पैली जयपुर में डॉ. बलरामजी जाखड़ री अध्यक्षता में अेक लूंठौ जळसौ होयौ जिणमें राजस्थानी भासा री राजमानता सारू होयै मोड़ै प्रयास पेटै दुख परगटीज्यौ अर आंदोलन तेज करण रौ प्रस्ताव राखीज्यौ। इण सूं पैलां 1968 में बीकानेर रै भारतीय विद्यामंदिर सोध प्रतिष्ठान री छात माथै राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत री अध्यक्षता में राजस्थानी भासा समिति रौ अेक जळसौ होयौ जिणमें नरोत्तमदास स्वामी, विद्याधर शास्त्री, मुरलीधर व्यास, मूळचंद प्राणेश, कुं. चंद्रसिंह बिरकाळी अर दूजा साहित्यकारां अर राजनेतावां भाग लियौ। इण जळसै में राजस्थानी भासा री राजमानता रौ प्रस्ताव पास कर'र केन्द्र अर राज्य सरकार नै भेजीज्यौ। 1971 में बीकानेर रै सोनगिरी चौक माथै डॉ. मनोहर शर्मा री अध्यक्षता में अेक राजस्थानी साहित्य सम्मेलन होयौ जिणमें ढाई-तीन हजार री भीड़ भेळी होई। औ पैलौ मौकौ हौ जद राजस्थानी भासा री राजमानता रौ मुद्दौ जन आंदोलन बणाईज्यौ। इण सम्मेलन में महाराजकंवर नरेन्दसिंह, अगरचंद नाहटा, मूळचंद प्राणेश, धनंजय वर्मा, मुरलीधर व्यास आद अनेक साहित्यकारां अर विद्वानां आपरा विचार राख्या अर राजस्थानी भासा री राजमानता रौ प्रस्ताव पास कर'र सरकार नै भेजीज्यौ। 1970 में कोलकाता रा रतन शाह राजस्थानी पत्रिका 'लाडेसर' रौ मुरलीधर व्यास विशेसांक काढ्यौ जिकौ राजस्थानी भासा री राजमानता मुद्दै माथै क्रांतिकारी विचारां सूं भर्‌योड़ौ हौ। राजस्थानी भासा री राजमानता सारू 1943 में महाराजा गंगासिंहजी रै देवलोक होवण रै बाद राजकुमार सादुलसिंहजी गाद्दी बैठ्या अर वां राजस्थानी भासा रै बधेपै सारू 1944 में ठा.रामसिंह री देखरेख में 'सादुल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट' री थापना

करवाई। 1943 सूं 1991 तांई राजस्थानी री राजमानता सारू मोतीलाल मेनारिया, जनार्दनराय नागर, नरोत्तमदास स्वामी, गौरीशंकर हीराचंद ओझा, मुनि जिनविजय, हरिनारायणजी पुरोहित, हिंगळाजदान, हीरालाल शास्त्री, जयनारायण व्यास, सागरमल बैगाणी, भंवरलालजी वैद, सुभकरण सुराणा, रामकरण आसोपा, कन्हैयालाल सेठिया, कुं चंद्रसिंह बिरकाळी, नानूराम संस्कर्ता, मोहन आलोक, हरीश भादाणी, रघुराजसिंह हाड़ा, प्रेमजी प्रेम, मोहम्मद सद्दीक, विजयदान देथा, चंद्रप्रकाश देवल, करणीदान बारहठ, जनकराज पारीक, मदन गहलोत, विद्यासागर शर्मा, रूपराम आशादीप, वी.अेन.कौशिक, हनुमान दीक्षित, ओम पुरोहित कागद, करणीदानसिंह राजपूत, सीताराम महर्षि, किशोर कल्पनाकांत, श्याम महर्षि, लक्ष्मीनारायण रंगा, शिवराज छंगाणी, कमल रंगा, किरण नाहटा, बैजनाथ पंवार, कल्याणसिंह शेखावत, शक्तिदान कविया, ओंकार पारीक, सांवर दइया, पारस अरोड़ा, तेजसिंह जोधा, गोरधनसिंह शेखावत, नागराज शर्मा, मनोहरसिंह राठौड़, रघुनाथसिंह शेखावत, पदम मेहता, मीठेश निरमोही, कानदान कल्पित, मूळदान देपावत, नंद भारद्वाज, उपेन्द्र अणु , ज्योतिपुंज, चेतन स्वामी, मदन सैनी, बुलाकी शर्मा, भंवरलाल भ्रमर, मालचंद तिवाड़ी, बी.डी.कल्ला, गोपाल जोशी, मक्खन जोशी, मानिकचंद सुराणा, गोकुल पुरोहित, मोहन छंगाणी, जोगेश्वर गर्ग, सूर्यकांता व्यास, घनश्याम तिवाड़ी, भीम पांडिया, मनोहरलाल गोयल, गुलाबचंद कोटड़िया, प्रेमचंद कोठारी, कुंदन माली, नेमनारायण जोशी, हरमन चौहान, भविष्य दत्त भविष्य, मुकुट मणिराज, सम्पत सरल, कमर मेवाड़ी, जहूरखां मेहर, दलपत परिहार, जुगल परिहार, भंवरजी भंवर, लक्ष्मणदान कविया, पवन पहाड़िया, रामनिवास लखोटिया, ताराप्रकाश जोशी, कल्याणसिंह राजवत, अर्जुनदेव चारण, श्रीमंत कुमार व्यास, वेद व्यास, डॉ.के.एल. शर्मा, सूर्यकरण पारीक, अम्बालाल माथुर, नारायणसिंह भाटी , गणेशीलाल व्यास, सीताराम लालस, जगदीश माथुर, बुद्धिप्रकाश माथुर कमल, मनोहर शर्मा, कन्हैया सहल, सुमेरसिंह दइया, देव कोठारी, भगवतीलाल व्यास समेत सैंकड़ू साहित्यकारां आप-आपरै इलाकां में आंदोलन रौ झंडौ ऊंचायां राख्यौ।

●

सादुल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट, बीकानेर 1956 में नानूराम संस्कर्ता रै काव्य-संग्रै 'कळायण' अर श्रीलाल नथमल जोशी रै उपन्यास 'आभै पटकी' रै लोकारपण बेळा भासाशास्त्री डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी आया। चटर्जी इण बेळा बडी भीड़ में राजस्थानी भासा पेटै इतिहासू भासण दियौ जिकै राजस्थानी भासा आंदोलन नै ऊरमा दी। इण मौकै इटली रा राजदूत कॉन्सल तिबेरिया भी आया। बीकानेर में 1979 में मरुधरा संस्था रै मारफत मानता आंदोलन री बात घणी तीखी अर ताता तेवरां साथै करीजी। इणी बगत कमल रंगा, ओंकारश्री, अम्बालाल माथुर रै बडेरचारै में आंदोलन सारू नुंवी नीति बणाई अर इण पेटै राजस्थानी युवा लेखक संघ बणायौ अर मानता आंदोलन नै जन-आंदोलन बणाय नुंवी दिसा दी। कमल रंगा साथै अविनाश माथुर, डॉ. मदनमोहन व्यास आद जुड़्या। इण संघ 1979 में बीकानेर रै कोटगेट माथै इतिहासू धरणौ लगायौ जिणमें हजारूं लोग जुड़्या। राजस्थानी युवा लेखक संघ 1980 में हरीश भादाणी रै बडेरचारै में पैली बार राजस्थानी नै आठवीं अनुसूची में भेळण रै साथै-साथै इणनै दूजी

राजभासा बणावण री मांग जोर-शोर सूं उठाई। इणमें लक्ष्मीनारायणजी रंगा भासा रै संवैधानिक तथ्यां नै सांम्हीं राख्या अर मोहम्मद सदीक, मदन केवलिया, ओंकारश्री, अविनाश माथुर, अरविंद बोड़ा, आनन्द गुप्ता, डॉ. तनवीर मालावत, मदनमोहन व्यास, भंवर मोदी, शिवलाल हर्ष, माणक आचार्य आगै बध हुंकार भरी।

●

सन् 1990 में डॉ. बी.डी. कल्ला अर जोगेश्वर गर्ग मिल'र सत्तापक्ष अर विपक्ष रै सगळै विधायकां रौ राजस्थानी भासा नै आठवीं अनुसूची में भेळण अर दूजी राजभासा बणावण रौ साझौ सहमति-पत्र मुख्यमंत्री भैरोसिंह शेखावत नै दियौ। इण सूं पैली जयपुर में लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, पूनमचंद बिश्नोई, डॉ. बी.डी. कल्ला, जानकी नारायण श्रीमाळी, पृथ्वीराज रतनू, बी. अेल. माली अशांत, ओंकारसिंह लखावत, सरला माहेश्वरी, श्याम महर्षि, वेद व्यास, कमल रंगा, मदन मोहन व्यास आद अैड़ौ ग्यापन मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाड़िया नै दियौ जिणमें करौली रा तीन विधायकां नै टाळ'र 197 विधायकां रा दस्कत सहमति में हा। 1991 में बीकानेर रै रायसर गांव में प्रधानमंत्री राजीव गांधी रौ काफिलौ रोक'र राजस्थानी री मानता सारू राजस्थानी युवा लेखक संघ कमल रंगा रै नेतृत्व में ग्यापन दियौ। इण सूं पैली वै बीकानेर में पैलड़ी प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी सूं चरचा कर मांग करी अर ग्यापन सूंप्यौ। 1992 में जनता दळ रा विधायक नत्थीसिंह विधानसभा में विरोध करयौ तौ जद जनता दळ रा राष्ट्रीय अध्यक्ष चौ. अजीतसिंह बीकानेर आया तौ राजस्थानी युवा लेखक संघ कमल रंगा रै नेतृत्व में विरोध जतायौ तौ वां लिखित में भरोसौ दिरायौ कै आज रै बाद म्हारी पार्टी राजस्थानी रौ विरोध नीं करैला। सन् 1992 में बीकानेर में राजस्थानी भाषा मानता संघर्ष समिति रौ गठन होयौ अर नुंवै सिरै सूं लड़त मंडी जिणमें ओंकार पारीक, श्रीलाल नथमल जोशी आद हा। इणरै बाद अेक और संघर्ष समिति जिणमें श्रीलाल नथमल जोशी, देवकिशन राजपुरोहित, देवदास रांकावत जुड़्या। आं समितियां री साखावां सगळा जिलां में बणी। जालोर में मोहनलाल सिद्धावत आत्मदाह री धमकी दी तौ कोलकाता में कन्हैयालाल सेठिया उपवास माथै बैठग्या। विधानसभा में डॉ.बी.डी. कल्ला सेठियाजी रो उपवास तुड़ावण री मांग सरकार सूं करी। इणी बगत संसद में राजस्थानी नै टाळ'र जद कोंकणी नै आठवीं अनुसूची में जोड़ दी तौ राजनीति में लाय लागगी अर राजस्थानी भासा नै कोंकणी भेळै आठवीं अनुसूची में नीं जोड़ण रै विरोध में जोधपुर रा महाराजा गजसिंह अर सांसद गुमानमल लोढा रै नेतृत्व में दिल्ली रै वोट कल्ब माथै इतिहासू धरणौ दिरीज्यौ। इण धरणै माथै आखै देस सूं राजस्थानी साहित्यकार, वौपारी अर नेता जुड़्या। वोट क्लब माथै सितम्बर 1992 नै लाग्यै इण धरणै में राजस्थान सूं बसां भरीज-भरीज दिल्ली गई । धरणै रै आयोजन सारू दिल्ली रा प्रवासी राजस्थानियां अर सांसदां सैयोग करयौ। धरणै में हरखचंद नाहटा, रामनिवास लखोटिया, पदम मेहता, बलराम जाखड़, नाथूराम मिर्धा, ओंकारसिंह लखावत, कल्याणसिंह शेखावत, विजयदान देथा, चंद्रप्रकाश देवल, गिरिजा व्यास,

रासासिंह रावत, सौभाग्यसिंह शेखावत, पृथ्वीराज रतनू, अब्दुल वहीद कमल अर राजस्थान रा मोकळा विधायक, साहित्यकार अर भणेसरी पूग्या।

●

लोकसभा अर राज्यसभा में भी राजस्थानी भाषा नै आठवीं अनुसूची में जोड़ण रौ मुद्दौ केई बार उठ्यौ तो केई बार सरकारू अर निजू विधेयक राखीज्या। महाराजा डॉ. करणीसिंह, महाराजा गजसिंह, गुमानमल लोढा, लक्ष्मीमल सिंघवी, ओंकारसिंह लखावत, रासासिंह रावत, नाथूराम मिर्धा, गिरिजा व्यास, बालकवि बैरागी, सरला माहेश्वरी, श्योपतसिंह, अर्जुनराम मेघवाल, देवजी पटेल, डॉ. कर्णसिंह, डॉ. बलराम जाखड़ अर दक्षिणी राज्यां रा सांसदां इण मुद्दै नै केई बार उठायौ। डॉ.करणीसिंह 14 मार्च 1966 अर 16 फरवरी 1968 में दो बार राजस्थानी भासा नै आठवीं अनुसूची में जोड़ण सारू निजू विधेयक राख्या, पण पास नीं होया। 1967 में अर 1998 में दो बार डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी भी इण सारू निजू विधेयक राख्यौ। सरकारू विधेयक ई आया, पण राजस्थानी नै विधेयकां सूं टाळीजतो रैयौ।

●

राजस्थानी भासा नै संविधान री आठवीं अनुसूची में जोड़ण अर राज्य री दूजी राजभासा बणावण री मांग नै लेय'र समूळै देस में न्यारै-न्यारै मंचां सूं अर न्यारा-न्यारा संगठनां सूं मांग होवती रैयी। इण समूळै आंदोलन नै अेक मंच माथै लावण सारू 1994 में अखिल भारतीय राजस्थानी भाषा मान्यता संघर्ष समिति री थरपणा करीजी। इण री थरपणा में लक्ष्मणदान कविया, डॉ. राजेन्द्र बारहठ, डॉ. भरत ओला अर हनुमानगढ़ जिलै रै साहित्यकारां री खासा भूमिका रैयी। इण समिति रा संस्थापक अध्यक्ष लक्ष्मणदान कविया अर महामंत्री डॉ. राजेन्द्र बारहठ बण्या । इणरै बाद भरत ओला, दारासिंह स्याग, हरिमोहन सारस्वत अर के.सी.मालू इण रा अध्यक्ष थरपीज्या। डॉ. राजेन्द्र बारहठ सरू सूं अब तांई महामंत्री है। इण समिति रै नीचै आंदोलन पेटै भोत काम होया। पैलड़ौ सांतरौ काम इण री हर जिलै में इकाई रौ गठन अर मोट्यारां, लुगायां, भणेसर्‌यां अर बुद्धिजीवियां री न्यारी-न्यारी कमेट्यां जिलैवार बणी अर अनुसासित तरीकै सूं काम करीज्यौ। इण समिति 3 अक्टूबर 2000 नै नोहर सूं हनुमानगढ़ तांई 90 किलोमीटर री मोटर साईकिल रैली काढ'र हनुमानगढ़ में बडौ जळसो कर्‌यौ अर पछै प्रधानमंत्री रै नांव कलक्टर नै ग्यापन दियौ। समिति रा उण बगत रा अध्यक्ष भरत ओला रै नेतृत्व में 3 मार्च 2003 नै विधानसभा माथै धरणौ दिरीज्यौ। धरणै में सामळ होवण सारू सगळै जिलां सूं बसां भरीज भरीज'र आई। इण धरणै री गूंज विधानसभा में उण बगत होई जद विपक्ष रा उपनेता डॉ. रामप्रताप धरणै सूं उठ'र विधानसभा में राजस्थानी भासा री मानता री मांग पेटै ध्यानाकर्षण प्रस्ताव राख्यौ जिण माथै लंबी चरचा होयी। इणी धरणै रै कारण 25 अगस्त 2003 नै राजस्थान विधानसभा में राजस्थानी भासा नै संवैधानिक मानता सारू संकळप-प्रस्ताव सर्वसम्मति सूं पास होयौ। समिति रा अध्यक्ष दारासिंह अर हरिमोहन सारस्वत री अध्यक्षता में 8 फरवरी 2005 नै गंगानगर सूं दिल्ली तांई री अेक राजस्थानी जनचेतना रथयात्रा निकाळीजी

जकी राजस्थान रा सगळा जिलां में पूग-पूग जळसा करया अर पछै दिल्ली में उपराष्ट्रपति अर गृहमंत्री नै मानता बाबत ग्यापन दियौ। इण यात्रा में रामस्वरूप किसान, दारासिंह स्याग, हरिमोहन सारस्वत, सत्यनारायण सोनी, अलीमोहम्मद पड़िहार, मनोज स्वामी, प्रह्लादराय पारीक, विनोद स्वामी अेक महीनै तांई साथै बग्या। यात्रा रौ जाग्यां-जाग्यां सुवागत होयौ। समिति री अब अंतरराष्ट्रीय इकाई भी थरपीजगी जिणरा अध्यक्ष न्यूयार्क राना रा प्रेम भंडारी है। इण संघर्ष समिति री जिला ईकायां ई सांतरौ काम कर रैयी है। हनुमानगढ़ जिलै रै परलीका गांव अर नोहर में मायड़ भासा मानता पेटै आए दिन कोई न कोई काम होंवतौ रैवै तो हनुमानगढ जिलै में ओम पुरोहित कागद अर मोट्यार परिषद रा प्रदेश संयोजक अनिल जांदू रै नेतृत्व में जिलै रै 1917 गांवां में 'म्हारी जुबान रो खोलो ताळो' पोस्टकार्ड लिखौ अभियान चलाईज्यौ। इण अभियान में राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, गृहमंत्री अर सांसद रै नांव कोई 6 लाख पोस्टकार्ड लिखीज्या। पोस्टकार्ड लिखण में पंजाबी समाज, सिक्ख समाज, अरोड़ा समाज अर सिंधी समाज भी बढ-चढ'र भाग लियौ। इणी भांत रौ अभियान जोधपुर रा संभाग पाटवी चंदनसिंह भाटी रै नेतृत्व में बाड़मेर अर जैसलमेर जिलां में चलाईज्यौ अर लाखां पोस्टकार्ड लिखीज्या। बाड़मेर में मानता सारू ई रगत सूं कागद लिखण रौ सांतरौ अभियान चलाईज्यौ।

●

अखिल भारतीय राजस्थानी भाषा मान्यता संघर्ष समिति दिल्ली सरकार माथै दबाव बणावण सारू लगोलग ग्यापन देय रैयी है अर दिल्ली में इणी साल अेक लूंठौ जळसौ भी करयौ है। बाड़मेर, नागौर, पाली, जोधपुर, बीकानेर, उदयपुर, बांसवाड़ा, नाथद्वारा अर अजमेर में भी जनजागरण सारू लूंठा जळसा तेवड़्या। मायड़ भासा दिवसां माथै सगळै जिलां में हर साल धरणा लगाईजै अर ग्यापन ई दिरीजै। प्राथमिक शिक्षा राजस्थानी में नीं देवण, टैट में अर आरअेस परीक्षा में राजस्थानी नै सामल नीं करण रै विरुद्ध समिति कानी सूं सगळा जिलां में प्रदरसण करया, धरणा दिया अर सरकार नै ग्यापन दिया। राजस्थान विधानसभा सूं पारित संकळप प्रस्ताव माथै केंद्र सरकार कानी सूं लारलै 10 सालां सूं कोई कार्रवाई नीं होवण रै विरोध में सगळै जिलां अर गांव-गांव सूं मुख्यमंत्री रै नांव ईमेल करीज रैया है। समिति रा संस्थापक लक्ष्मणदान कविया, अध्यक्ष के. सी. मालू, महासचिव डॉ. राजेन्द्र बारहठ, सचिव डॉ. सत्यनारायण सोनी, प्रदेश प्रचार प्रभारी विनोद स्वामी अर अंतरराष्ट्रीय पाटवी प्रेम भंडारी राजस्थानी भाषा री मानता सारू सगळै स्तरां माथै काम अर सम्पर्क कर रैया है तौ मातृभासा राजस्थानी छात्र मोरचा रा पाटवी डॉ. अशोक गहलोत, गौतम अरोड़ा, सतपाल खाती अर गौरीशंकर कुलचंद्र प्रदेश भर रा भणेसरयां में मायड़ भासा री अलख जगाय रैया है ।

❖❖

24-दुर्गा कोलोनी
हनुमानगढ़ संगम-335512 (राज.)
मो. 9001325208

● *भासा-विगत-2*

राजस्थानी भासा री मान्यता रौ सवाल

डॉ. आईदानसिंह भाटी

जद ई किणी भासा बाबत बात चालै तौ म्हनैं अचाचूक रवीन्द्रनाथ चेतै आवै। वां बाळपणै रै अेक संस्मरण रै मार्फत मातृभासा रौ महत्त्व समझायौ है। आखै जगत रा चिंतक मातृभासा मांय शिक्षा रौ महत्त्व मानै। भारत री ख्यातनांव चिंतक रमणिका गुप्ता वडोदरा (गुजरात) में होयै 'भासा रिसर्च अेंड पब्लिकेशन सेंटर' रै अेक सम्मेलण रौ हवालौ देवता थकां कैयौ है कै, ''आपां रै देस में 1961 री गणना अभिलेख रै आधार माथै 1652 मातृभासावां है अर दुनिया में बोलीजण वाळी लगैटगै आठ हजार भासावां मांय सूं लगैटगै नब्बै फीसदी भासावां 2050 ई. तांई विलाईज जावैला।'' आगै रमणिकाजी कैवै, ''आं भासावां रै लुप्त होवण रौ अेक लूंठौ कारण है, आदिवासी खेत्रां मांय कुकुरमुत्तां री भांत अंग्रेजी माध्यम री स्कूलां रौ खुलणौ। इण सूं ई आदिवासी भासावां री हाण होय रैयी है।''

म्हैं अठै अवेस करनै मातृभासावां रौ मुद्दौ उठायौ है, जिणसूं कै जीवण में मातृभासा रौ महत्त्व जाण्यौ जाय सकै। म्हैं के कोई पण समाजचेता राजस्थान री मातृभासा हिंदी नै नीं मानैला। राजस्थानी भासा बाबत पैली अैतिहासिक भूल आ होयी कै पुरुषोत्तमदास टंडन, नेहरूजी आद राजनेतावां री बात में आयनै राजस्थान रा तत्कालीन राजनेतावां मातृभासा री बळी चढाय दी। दक्षिण भारतीय लोगां रै हिंदी विरोध री बातां बणायनै, हिंदी रौ उण बगत समरथन करणै अर पछै राजस्थानी नै मान्यता री बात कैयनै राजस्थान रा वासिंदां नै जिण आंधी गळी में धकेलीज्या, उणरी सजा म्हे आज लग भुगतां हां।

मातृभासावां रै मुद्दै माथै म्हैं अठै चावा-ठावा भासाविद सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या रौ वक्तव्य मांडणौ मुनासिब समझूं, जिणसूं प्रांतीय भासावां अर बोलियां रौ महत्त्व थापित होवै है, ''प्रांतीय भासावां रै पुनरुद्धार सूं हिंदी रौ आंतरप्रादेसिक महत्त्व किणी तरै कम नीं व्है सकै। पच्छाही रा लोगां जरूर हिंदी रौ थोड़ौ-घणौ पसराव करियौ है अर टूटी-फूटी व्याकरण-भ्रस्ट हिंदी नै अंगेजनै पच्छाही रै आसै-पासै रा लोग हिंदी नै भारत री राष्ट्रभासा बणायी है, पण राष्ट्रभासा कै आंतरप्रादेसिक भासा मांय अर घरेलू टाबरां री शिक्षा री बोली कै प्रांतीय कामकाज री बोली में घणौ फरक है। मातृभासा रै सिवाय किणी पण दूजी भासा मांय मिनख रै हियै रा

भावां रौ पूरौ-पूरौ प्रकास नीं व्है सकै अर जद तांई मिनख साहित्य में आपरौ पूरौ प्रकास नीं कर सकै, तद तांई वौ जकौ साहित्य बणावण री आफळ करै, उण मांय मोकळी व्यर्थता आय जावै। श्री तुलसीदासजी अर विद्यापति जकौ कीं लिख्यौ— आपरी मातृभासा में ईज लिख्यौ, इण वास्तै ईज भारतीय-साहित्य रै बाग में विद्यापति रा पद अर तुलसीदास रौ 'रामचरितमानस' हर तरै सूं सफळ सूं सफळ रचना होय'र घणी सूं घणी लोकप्रिय होय सकी अर जन-जन री जीभ माथै सोरै सांस ठौड़ पाय सकी। भारत में इण बगत 15 मुख्य भासावां चालू है। प्रांतीय बोलियां री तौ गिणत ई नीं करी जाय सकै। आं मुख्य कै साहित्यिक भासावां मांय 11 भासावां उत्तर भारत री गिणीजै अर चार दक्षिण भारत री। आं रै टाळ कीं अैड़ी भासावां ई है जकी आज साहित्यिक महत्त्व री अधिकारणी तौ कोनी, पण प्राचीन काल में वांरौ साहित्य उच्च कोटि रौ हौ अर वांरी संतानां रै हियै री सगळी बातां वां ईज भासावां में प्रगट होवती ही। राजस्थानी अर मैथिली— दूजी बोलियां रै सागै आं दो भासावां रै निकेंद्रीकरण री बात आज हिंदी संसार में लाईजी है। 'हिंदी प्रांत' मांय जकी बोलियां फगत घर अर सीमित प्रांत में काम मांय लिरीजै, वां बोलियां रा दो जबरदस्त अर नामी वकील हिंदी साहित्य खेत्र में पधारया है। वां मांय सूं अेक है श्री बनारसीदास चतुर्वेदी अर दूजा है श्री राहुलजी सांकृत्यायन। भासा तात्त्विकी दीठ सूं म्हारी राय आ है जठै साच्याणी व्याकरण रौ फरक दीसै— जठै प्राचीन साहित्य रैवण रै कारण प्रांतीय बोली सारू उणरै बोलण वाळां मांय अभिमानबोध होवै अर जठै प्रांतीय बोली बोलण वाळा टाबरां अर उमरवान लोगां नै हिंदी अंगेजण में अबखायी होवै, बठै अैड़ी प्रांतीय बोली री शिक्षा अर प्रांतीय कामकाज में लावण रौ सवाल आय सकै। जठै तांई म्हां देखां हां, व्याकरण री दीठ सूं राजस्थानी— खड़ी बोली हिंदी सूं अलग है। राजस्थानी जनता मांय आपरै प्राचीन साहित्य सारू अेक नवी चेतना पण दीसै है। ...राजस्थानी रा प्राचीन साहित्य बाबत कीं कैवण री जरूरत नीं है। जे तथाकथिक 'हिंदी साहित्य' सूं राजस्थानी में लिख्योड़ौ साहित्य काढ दियौ जावै, तौ प्राचीन हिंदी साहित्य रौ गौरव कित्तौ ई घट जावैला। चंदबरदाई सूं पैली रै बगत में अर उणरै पछै राजस्थानी रा जित्ता कवि होया है, वां माथै ज्यूं-ज्यूं उजास नांखीजै, त्यूं-त्यूं म्हांरौ इचरज अर आणंद बध जावै। फगत राजस्थानी बोलण वाळां नै ईज इणरौ गीरबौ नीं है, बल्कै आखै भारत नै इणरौ गौरव है। इण गौरव रै कारण जे राजस्थानी लोग आपरी मातृभासा रौ पुनरुद्धार कै पाछी थापना करणी चावै, तौ इणमें रीस मानण री कै अपरोगी बात नीं है। भारत री खास-खास 15 भासावां मांय जे राजस्थानी जैड़ी दो-च्यार भासावां थापित व्है जावै, तौ इणमें आसंका अर डर वाळी कोई बात नीं है। राजस्थानी लोग आपरी मूर्च्छित-सी आतमा नै फेरूं सजग कै सचेत करणी चावै, तौ इणसूं आखै भारत नै लाभ पूगैला, अर राष्ट्रीय अेकता री ई कोई हाण नीं होवैला।'' (श्री सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, भारतीय भासातत्त्व रा आचार्य, कलकत्ता विश्वविद्यालय, 11.2.1944)

अठै आ बात पण घणी महताऊ है कै सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या रौ औ वक्तव्य आजादी सूं पैली रौ है। इण वक्तव्य सूं पैलां फ्रेंच विद्वान गार्सा द तासी आपरै ग्रंथ 'इस्तार द ल लितरेत्यूर ए ऐं ऐंदूस्तानी' अर सर जार्ज ग्रियर्सन 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' मांय राजस्थानी रौ प्रामाणिक भासा वैग्यानिक विस्लेसण कर चुक्या हा। राजस्थानी भासा री जिण बोलियां रौ

वितंडौ बणायनै राजस्थानी नै अेक भासा रै रूप में खारिज करण री आफळ करीजै है, वै ईज बोलियां भासावां रौ प्राण व्हिया करै। सर जार्ज ग्रियर्सन रै 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' मांय तौ आज रै मध्यप्रदेस री माळवी अर हरियाणा री बांगरू तांई राजस्थानी भासा री बोलियां है। बोलियां सूं भासावां सिमरध होवै, जे तेलुगु 36, कन्नड़ 32, मलयाळम 14, कोंकणी 15, तमिल 22, नेपाली 6, गुजराती 27, पंजाबी 29, बंगाली 15, उड़िया 24, अंग्रेजी 57 अर हिंदी 43 बोलियां रै होवता थकां ई अेक भासा है तौ 73 बोलियां वाळी राजस्थानी आं सगळां सूं सिमरध भासा है।

भासा वैग्यानिकां मांय अेक खांतीलौ नांव है— प्रो. ज्यूल ब्लॉख। वां रौ ग्रंथ 'ल आँ दो एरिया' मांय वै श्री सिलवेंलेवी ए. मेइए अर श्री टर्नर जैड़ा भासा सास्त्रियां रौ इण वास्तै आभार मानै कै, ''भासा री प्रामाणिकता सारू बोलण वाळां री संख्या कोई महताऊ इकाई नीं है, हालांकै औ रोचक तत्त्व होय सकै है।'' वै आगै लिखै, ''आधुनिक भासावां री रोचकता वांरै संख्या सूचक महत्त्व सूं घणी इधकी है। उणरै साम्हीं वां भासावां रै जाणण री अठै जरूरत नीं है, जिणां रौ अमूमन वरणन करियौ जावै, हालांकै वां मांय कींअेक री गणना संसार री बडी-बडी भासावां में करी जावै। व्यापक अरथ मांय हिंदी री उणमें छठी ठौड़ है, फ्रांसिसी रै मुकाबलै बंगाली सातवीं ठौड़ माथै आवै, बिहारी तेरवैं, मराठी उगणीसवैं, पंजाबी, राजस्थानी, उडिया लगोलग बाईसवैं, पच्चीसवैं अर अठाईसवैं स्थान माथै।'' (पृ. 19-20)

सोझीवान पाठकां नै विचार करणौ चाईजै कै भासा-वैग्यानिक राजस्थानी नै संसार री बडी-बडी भासावां में गिणावै है अर लाल बुझक्कड़ राजस्थानी विरोधी आंख्यां मींच्या प्रळाप कर रैया है... 'राजस्थानी कैड़ी ?' 'इण में तो बोलियां है ?' तुलसीदासजी अैड़ा लोगां सारू लिख्यौ है— 'मूंदहुं आंख कतहु कछु नाहिं।'

कुणसी बोली किण भासा री है कै अेक भासा री बोली किणी दूजी भासा रै नैड़ी कियां पूगै, औ ई भासा वैग्यानिक तथ्य है। भासावां री सीमावां अर वां रै अंत:संबंधां नै लक्षित करनै सर जार्ज ग्रियर्सन घणी पैल करै, ''भासावां री सीमावां कृत्रिम मिश्रण सूं छिप जावै, बदळाव अमूमन होळै-होळै होवै, जिणरौ मतळब है, दो न्यारी भासावां अंतरां वाळी भासावां री श्रेणी में आय जावै, तौ इणसूं किणी नै अचरज नीं होवणौ चाईजै, विचारजोग है, कांई भोजपुरी आपरै अगूण कै आथूण री सींवां सूं संबंधित है ? कच्छ री भासा कांई सिंधी है कै गुजराती ?'' (प्रो. ज्यूल ब्लॉख—भारतीय आर्य भाषा)

सर जार्ज ग्रियर्सन रौ औ दाखलौ म्हैं इण सारू दियौ है ताकै अणजाण लोग बोलियां रै वितंडै नै समझ सकै। जका लोग राजस्थानी नै फगत मारवाड़ी समझै है, स्यात वै ग्रियर्सन री बात सूं बोलियां रौ मरम समझ जावै। ग्रियर्सन कच्छी बोली माथै सिंधी रै प्रभाव नै परिलक्षित कर रैया है, जकी कै आज गुजराती रौ महताऊ अंग है। आज मेवाती माथै भलां ई ब्रज रौ असर हुवै, कै वागड़ी माथै गुजराती रौ प्रभाव मिळै, पण सर जार्ज ग्रियर्सन रै मत मुजब वै आपरी मूळ भासा राजस्थानी री बोलियां ईज मानीजैला। सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या जिण राजस्थानी अर मैथिली नै अेक ईज स्तर पर राखी ही, वा मैथिली राजनीतिक प्रभाव सूं संविधान री आठवीं अनुसूची मांय पूरण भासा रौ दरजौ हासल कर चुकी है। कोंकणी ई मराठी सूं न्यारी

होय'र आठवीं अनुसूची मांय पूरण भासा बण चुकी है, पण बारला तत्त्वां रै हस्तक्षेप अर राजस्थान रा राजनेतावां री उदासीनता रै चालतां राजस्थानी समाज आपरी भासा री मान्यता सारू संघर्स कर रैयौ है। हरेक भासा री अेक केंद्रीय उपभासा कै बोली होवै है जकी संपर्क भासा रौ रूप ग्रहण करया करै। इण संपर्क भासा रै विगसित होवण रा केई कारण होया करै। खड़ी बोली नै ई जिण भांत दूजी बोलियां स्वीकारी है, राजस्थानी ई पक्कायत अेक संपर्क भासा रै रूप में विगसित होवण री प्रक्रिया में है। राजस्थान में विश्वविद्यालयां मांय आ पढाई जावै, आकासवाणी अर स्वतंत्र न्यूज चैनलां माथै समाचार जिण राजस्थानी में पढाया जावै, साहित्यिक पत्र-पत्रिकावां में जिण भासा मांय लेखन होवै है, वौ ईज तौ उणरौ संपर्क रूप है। हिंदी रा अंतरराष्ट्रीय ख्यातनांव मनीषि प्रो. नामवरसिंह अनेक मंचां सूं आ बात कैयी है कै राजस्थानी नै संविधान री आठवीं अनुसूची में सामल करनै उणनै पूरण भासा री मान्यता मिलणी चाईजै। वां बाड़मेर मांय अेक साक्षात्कार मांय औ पण कैयौ हौ कै आ राजस्थान रा लोग तय करैला कै वांरी संपर्क भासा कुणसी बोली होवैला? आजकाल जका लोग मारवाड़ी नै राजस्थानी कैवै है वै प्रकारांतर सूं संपर्क बोली कानी संकेत कर रैया है।

ओम पुरोहित 'कागद' रै सबदां में कैवूं तौ ''आपरै टाबरां री जबान काट'र राष्ट्र रै चरणां में राखी ही राजस्थानियां।'' बोलियां अर विभिन्नतावां री बात कैवणिया वै तत्त्व है, जका नीं तौ भासाविद है अर ना ई समाज-चिंतक। अै लोग समै-समै पर अखबारां अर मीडिया रा चंद लोगां रै मार्फत राजस्थानी रै विरोध रा सुर रंग्योड़ै सियाळियां री तरजां माथै उछाळै, पण जनता अजै आंनै ओळख नीं सकी है। राजनेता वांरी चिरळाट अर गीदड़ भभकियां मांय आय जावै अर बेतुकै बयानां सूं राजस्थानी समाज नै बरगळाय रैया है। कीं बरसां पैली अेक अखबार अेक विमर्श चलायौ, जिण मांय राजस्थानी विरोधियां नै प्रमुखता दीन्ही। हां, राजस्थानी समरथकां रा मतां नै ई छापीज्या। राजस्थानी विरोधियां रै मतां में 'इस तरह तो हिंदी परिवार बिखर जाएगा', कै 'शांत प्रदेश कहीं जलने न लग जाए' जैड़ा भावुक वक्तव्य दिरीज्या हा अर विमर्श बिना किणी नितार रै खतम करीजग्यौ। अठै आ बात उल्लेखजोग है औ वौ समै हौ जद राजस्थानी री मान्यता री बात केंद्र मांय सिरै चढ्योड़ी ही। इण भांत विरोध रै इण होव्वै सूं मान्यता री बात टळगी।

राजस्थान राज्य अभिलेखागार रै रिकार्ड सूं आं तथ्यां री पुष्टि होवै है कै रजवाड़ां री बगत राजकाज, शिक्षा, हुंडी, पट्टा-परवाना अर दूजा कामकाज राजस्थानी भासा में ईज होवता हा। रजवाड़ां रौ औ स्थान राजस्थानी भासा रै कारण ईज राजस्थान बाज्यौ। सिंधी, नेपाली आद भासावां री मान्यता मांय राज्यां रौ लफड़ौ नीं हौ, पण राजस्थानी सारू राज्य विधानसभा मांय मान्यता रौ प्रस्ताव पास करावणौ जरूरी होयग्यौ। राजनेता इणनै टरकावता रैया। जद डॉ. सोनाराम बिश्नोई राजस्थानी भासा, साहित्य अर संस्कृति अकादमी बीकानेर रा अध्यक्ष हा, तद 2002 रै अकादमी रै वार्षिकोत्सव मांय तत्कालीन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत गांधीवादी मूल्यां मांय आस्था राखण रै कारण नेमीचंदजी जैन 'भावुक' अर डॉ. सोनाराम बिश्नोई सूं कैयौ कै लगैटगै संसार री सगळी भासावां मांय गांधीजी री आतमकथा रौ अनुवाद होय चुक्यौ है। जे अकादमी इण काम नै कर देवै तौ म्हैं राजस्थानी भासा री मान्यता रौ

संकळप राजस्थान विधानसभा सूं पारित करवाय देवूंला। नेमीचंदजी जैन 'भावुक' अर डॉ. सोनाराम बिश्नोई इण बात नै गंभीरता सूं ली अर भावुक साब गांधीजी री आतमकथा री पड़त डॉ. सोनारामजी नै देय दीन्ही। औ फगत अेक संजोग हौ कै डॉ. बिश्नोई अर म्हारा मित्र दलपत परिहार रै कैवण सूं म्हैं वौ काम अेक तै समै मांय पूरौ कर दियौ अर उणरौ लोकार्पण जोधुपर रै गांधी भवन में गांधी जयंती माथै बरस 2002 में खुद मुख्यमंत्री अशोक गहलोत करियौ। आपरै मुख्यमंत्री रैवण रै उण काळ में राजस्थान विधानसभा रै आखरी सत्र रै आखरी दिन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत शिक्षामंत्री डॉ. बुलाकीदास कल्ला सूं राजस्थानी भासा री मान्यता रौ संकळप प्रस्ताव रखवायनै विधानसभा मांय ध्वनि-मत सूं पारित करवायौ। (औ ई अेक संजोग हौ कै म्हनै इण अनुवाद माथै साहित्य अकादेमी नई दिल्ली रौ 2006 में अनुवाद पुरस्कार मिल्यौ।) मान्यता री दड़ी अबै दिल्ली रै पाळै मांय है। तत्कालीन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत अर शिक्षामंत्री डॉ. बुलाकीदास कल्ला तौ आपरी मातृभासा रौ रिण चुकाय दियौ। अबै मान्यता री बात विकास-पुरुसां रै पाळै मांय है। अेक राष्ट्र, अेक भासा, अेक धरम री बात कैवण वाळां नै मातृभासावां री मैकती विविधरूपा फुलवाड़ी कित्ती भावैला, औ तौ भविस ईज बतावैला।

राजस्थानी भासा री मान्यता रौ सवाल आधै सईकै सूं साहित्यकार उठाय रैया है, पण अबै उणसूं युवा वरग अर जनता जुड़ण लागी ही कै अचाचूक बजारू दल्ला बीच में आय टपक्या है जका घणी चिंता रौ विसै है। समरपित लोग, जका राजस्थानी री मान्यता री आवाज नै बुलंद करी ही, वै आज खुद नै उपेक्षित मैसूस कर रैया है। युवा लोग बजारू दल्लां री चालबाजियां नै समझ नीं रैया है। मूल्य विहूणता रै इण दौर मांय मान्यता रौ सवाल 'नक्कारखानै मांय तूती' बण'र रैयग्यौ है। राजनीतिक इच्छा-सगती रौ अभाव अर आंचळिक मुद्दा में उळझ्योड़ा राजनेतावां सूं सारथकता अर मूल्यवान पहल री उम्मीद करणी अपणै आपनै धोखौ देवणौ है। राजस्थानी संस्थानां सूं जुड़्योड़ा बिकाऊ लोगां रौ चरित्र साव व्यक्तिवादी अर स्वारथी सिद्ध होय चुक्यौ है। शिक्षाविद 'कागलै' सूं 'क्रों' नै महताऊ सिद्ध करण में लाग्योड़ा है, वांरी दीठ में चकाचौंध बजार है, वैश्विक सुपना है, बजारू टुकड़ां माथै पळण वाळी राजनीति धरतीपुत्रां रौ दरद नीं जाणै, वा मातृभासा री पीड़ कांई पिछाणैला?

❖❖

8 बी/47, तिरुपति नगर, नांदड़ी
जोधपुर (राजस्थान) 342015
मो. 09414325867

● *गीत*

मायड़ भासा राजस्थानी

डॉ. बस्तीमल सोलंकी भीम

किरोड़ां कंठां में गूंजै, मायड़ भासा राजस्थानी।
कुण नीं जाणै इणनै, आ मीठी इमरत वाणी।।

रूड़ा रूपाळा दूहा छंद, घणा रासा अर ख्यातां।
इणरी मरोड़ जगचावी, मन मोवै कथावां बातां।।
उधारी बोली क्यूं बोलां, क्यूं मेलां जीभ अडाणी।
कुण नीं जाणै इणनै, आ मीठी इमरत वाणी।।

सोनै सो इतिहास मंड्यौ, भर्‌यौ पूर साहित भंडार।
इणरौ रुतबौ है ऊंचौ, सुरसत री वीणा रा तार।।
जग में स्यान सवाई राखै, वीर भू री वीरवाणी।
कुण नीं जाणै इणनै, आ मीठी इमरत वाणी।।

मीरां री मायड़ भासा, होतां पूत बणी निपूती।
कवियां री कलम जगावै, कद जागैला जनता सूती।।
घणी रची सतसईयां इणमें, आ मोटी धणियाणी।
कुण नीं जाणै इणनै, आ मीठी इमरत वाणी।।

अै शकुनी रा भरमाया, कद निज मायड़ नै पूजी।
मायड़ भासा में मांगै वोट, पण जीत्यां पछै बोली दूजी।।
थोथा भासण झूठी दिलासा, नेतावां री आदत पुराणी।
कुण नीं जाणै इणनै, आ मीठी इमरत वाणी।।

❖❖

राजस्थान साहित्य चिंतन परिषद्
मु. पो. भीम-305921, जिला-राजसमंद (राज.)

● *कहाणी*

मेळौ

राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफिर'

''लारली बरियां गोगैजी रा अेक सूं अेक इधका सोवणा निसांण हा। पण यार, आपरलौ इत्तौ जोरगौ कोनी हौ।''

''आपरली मेड़ी रौ निसांण ई कमती तौ कोनी हौ भाईड़ा!''

''थनै ठाह ई कोनी साचला निसांण कैड़ा हुवै! निसांण साथै भगतां रै हाथां अर गळै मांय भांत-भंतीला सांप! केई जणां रै हाथां सांकळां रा झूमका! सांकळां नै घुमा-घुमायनै डील माथै पटकै। अै सगळा आपरै साथै हा के?''

''म्हनै अेक दो जणां रै हाथां में पतळी जेवड़्यां-सी चेतै तौ आवै...।''

''काळा नाग तौ कोनी हा नीं... अर अबकै ई आपणै तौ बांसड़ै नै फगत गाभा-लत्ता सूं सजायनै निसांण त्यार कर लीन्हौ। म्हनै तौ जाबक ई सोवणौ कोनी लाग्यौ। आपरलौ जवांन भगत तौ खुद ई सांपां सूं डरै। हाथां मांय सांपला लेय लेवै तौ पजामौ सूगलौ करदै! निसांण तौ थूं देख्या ई कठै है। आपां आज देखस्यां...।''

''पण रिपिया-पईसा मिल्या हुवै नीं! बापू नै प्लास्टिक अर काच री बोतलां रा रिपिया नीं देवता तौ अबै काम आवता। अब कद तौ चुगनै ल्यावां अर कद बेचां? बगत ई नीं रैयौ। मेळै मांय मां रै साथै जायां मावड़ी तौ कीं नीं दिरावैली। आपां निरवाळा ई जास्यां। ढोल, पीपाड़ी, लांप अर कचकड़ै वाळी मोटर लियां ई पच्चीस-तीस रिपिया तौ लाग जासी, खास्यां के?''

''भाया, चायै कीं हुय जावै, मेळै खातर अबकै कम सूं कम पचास रिपिया लेस्यां।''

''पचास सूं पार कोनी पड़ै...। वौ डोलर-हींडौ अर चकरी री सवारी...!''

''म्हैं तौ कालै बापू सूं चटीड़ खाया ई हा। थूं ई पितवांण कर दखां। बापू रै अबकै कड़की है, पईसां रै नांव सूं ई चिणखौ लागै। म्हैं तौ कीं नीं मांगूं। आज थूं मां सूं मांगलै, स्यात मां देयदै! चाल मांयनै चालां।''

आज गोगा नवमी है, धुर-मेड़ी रै ताळ मैदान मांय जबरौ मेळौ घलै। वठै जावण रौ चाव नेन्हा-मोटा सगळां नै रैवै। दिनुगै पैली घर री देवळी माथै बैठ्या चवदै-पंदरा बरस रा दो

भाई गोगोजी रै मेळै जावण री बतळावण करै हा। मेळै पेटै वांरौ कोड नावड़ै नीं हौ। पण बिना पईसां मेळै जावणौ किणविध हुवै ?

''मां, आज गोगैजी रौ मेळौ भरसी। थूं ई तौ मेळै जासी नीं। म्हैं निरवाळा, अेकला ई चल्या जावां के ?''

''दिनुगै पैली थांरै मांय गोगोजी बड़ग्यौ के ? काम रा न काज रा, दुसमीं अनाज रा! सिंझ्या पड़ै म्हारै साथै ई चाल्या।'' मां बूंदी बांधती थकी पडूत्तर दीन्हौ।

''मां, म्हे दोनूं जणां आपूं-आप चल्या जासां, म्हांनै रिपिया देयदै।'' छोटकियौ छोरौ मां रै कनैसीक लागनै बोल्यौ।

''म्हनै काम करण दै, माथौ मतना खा। आज ई बूंदी नक्की करनै लीलगर नै गाभा पूठा देवणा है।''

''मां, थूं काम कर लेयी, पण पईसा तौ देयदै, म्हैं दोनूं आपूंआप मेळै चल्या जासां।''

''सिंझ्या नै देसूं, नीतर थांरौ बापू आय जावै, वीं सूं मांग लेयी।''

''मां, म्हनै अबकी-अब देदै, बापू तौ सिंझ्या पड़ै आसी।''

''थनै सौ बरियां कैय दीन्हौ सुणै कोनी के, बोळा लट्ठ! म्हारौ लोही मतना पी, दोनूं जणा बापू कनै जावौ परा।''

''मां, बापू कोनी देवै। कालै ई पईसां रै नांव सूं चूनियै रै सपीड़ घाल्या।...थनै ठाह है नीं! फेर ई थूं बापू कनै जावण खातर कैवै।''

''म्हनै ठाह है, जदई कैवूं मरज्याणा! चूनियौ बोलबालौ बैठ्यौ है कै नीं ? थूं ई बोलबालौ पड़्यौ रे, नींतर म्हैं ई कनपटी तळै मेल द्यूंगी। अठैई पींपाड़ी बाज जावैली। पईसां री लाय लाग रैयी है दिनुंगै पैली! म्हारै कनै धेलौ ई कोनी।''

''मां, राधियौ अर म्हैं दोनूं कालै ई पूठा देय देस्यां, बोतलां बेचनै...। अेकर देयदै, थारली पेई मांय सौ-पचास तौ मिल जासी। ...क्यूं काठी हुवै!''

''मर-मरज्याणा! अबै थूं ई बकै लाग्यौ, कालै री ई चेतै कोनी थनै ? म्हारी पेई रौ नांव लियौ है तौ सूंत नाखूंली... आ कामड़ी दीसै है नीं! खायग्या म्हनै जींवती नै ई... परै जावौ हौ कै गदीड़ पड़्यां मानसौ ? पूठा देवण रौ कौल न्यारौ करै मरीलियौ!'' अबकै जीवणी खासी रीसाणी हुयनै छोरां नै दकाल्या।

दोनूं जणा दांत दिखावता पूठा दरूजै सांम्ही देवळी माथै बैठग्या। गळी मांय अणूंतौ सूगलवाड़ौ! असवाड़ै-पसवाड़ै कादौ-कीच। पाणी निकासी सावळ नीं हुवण रै कारण इण बास मांय बारामासी पाणी भरयौ रैवै। नीची जात रै वासींदा रा लगैटगै चाळीस घर। घणकरा मजूरी करनै पेट लिवाड़ी करणियां। रोजीना कूवौ खोदनै पाणी पीवणिया। बास रै सांकड़ै ई सरकारी पोसाळ जकी मांय अैड़ै टाबरां रा नांव चालै पण पोसाळ जावणिया गिणती रा ई है। औ बास ई अेक कॉलोनी रै नांव सूं जाणीजै। चाय री दुकानां मांय गिलास धोवणिया, गळी-मोहल्ला मांय कूटळौ चूगणिया कै फेर पुराणा अखबार, लोह-लक्कड़ खरीदण वाळा टाबर इण

कॉलोनी रा है। कॉलोनी रै चिपती थकी पईसां वाळां री लगैटगै हजार घरां वाळी कॉलोनी। कठै राजा भोज अर कठै गांगलौ तेली! आभै अर जमीं रौ आंतरौ, औ आंतरौ तौ कदैई मिट नीं सकै। पण दोनूं कॉलोनी रा वासिंदा अेक-दूजै रा मूंडा तौ देखै ई है। जियां आभौ अर जमीं अेक दूजै सूं मूंडौ नीं फेर सकै बियां ई दोनूं कॉलोनी रा मिनख अणचाया आंम्ही-सांम्ही तौ हुवता ई रैवै।

इण भांत री बसावट हुयगी तौ हुयगी। मोटोड़ी कॉलोनी मांय घणकरा बिचलै वरग रा है, केई बेसी अमीर। मोटोड़ी कॉलोनी मांय जावण रै अेक ओछै पैंडै रै गेलै रै कारण लोगां रौ आवणौ-जावणौ इण सूगलै बास मांय सूं बेसी हुवै। मोटर-गाडी कै स्कूटर-मोटरसाइकल वाळा कॉलोनी रै नैमती गेलै सूं आवै-जावै। जका उपाळा जावै-जावै, वै ई नाक भींचनै, कादै सूं बच बचायनै नीसरै। पण बगत कमती लागै अर पग-तुड़ाई कमती हुवै। अठै टाबर गळी मांय उछळता-कूदता रैवै अर वांरी मावड़ल्यां ई गळी मांय, दरूजै सांम्ही कै देवळी मांय कीं खोरसौ करती निजर आय जावै। इण गत हर भांत रै मिनखां सूं इण बास री रौनक, मोटी कॉलोनी सूं कीं बेसी रैवै। मोटी कॉलोनी मांय लुगाई-टाबर घरां सूं बारै कमती निजर आवै...।

पईसां रौ गेलौ नीं नीसर्‌यौ इण कारण दोनूं टाबर कीं बेसी अजका-अचपळा हुयग्या। दरूजै सांम्ही बैठ्या, कादै मांय दग्गड़ बगावता थका कंपीटिशन करै हा, कै सै सूं बेसी अर आंतरै तांणी कादै-कीच रा छांटा कुण उछाळै? जद-कदै कुणई लुगाई-मोट्यार आवतौ दीसै तद दग्गड़ छोडनै हाथ बांध स्याणा हुय जावै। आज गंडक ई वांरी गत जाणता थका आंतरै ई पड़्या हा। वै ई जाणै कै जे सांकड़ै पूग्या तौ पटपड़ी मांय दग्गड़ खावणा पड़ैला। इण बगतै गेलै रै कारण आवणिया-जावणियां री लगोलगी आज ई हरमेस दांई ही।

लगैटगै इग्यारै बजग्या। तावड़ी बधै लागी। पण संकड़ी गळी रै कारण अठै अजै तांणी छियां ही। कीं ताळ पछै दो मिनख आवता दीस्या। दोनुवां रै मोढां माथै गमछा हा। दोनूं भाई इत्ता भोळा ई कोनी हा। वै जाणग्या कै मोटोड़ी कॉलोनी मांय कुणई सलटग्यौ है। चांणचकै ई वांरी आंख्यां मांय अेक चिलक दीसी। जियां-जियां वै दो माणस सांकड़ै आवता जावै बियां-बियां वै दोनूं टाबर कदै आपसरी में बतळावण करै, कदै वां दोनूं मिनखां कांनी देखै हा।

''यार राधिया बूझ दखां।''

''म्हैं थारै सूं छोटौ हूं यार, थूं ई बूझलै चूनिया। म्हनैं दकाल मारसी यार...! थूं बूझलै। अबै वै सांकड़ै आवै।''

''तेरी इयां फाटै तौ मेळै खातर क्यूं हंगायौ-मूतायौ हुय रैयौ है? बूझण सूं वै थनै काटै हा के हरामी? हरामड़ी का... वै तौ गया परा, अबै लारै सूं भाजनै बूझ्यां साचाणी गदीड़ पड़ैला। बोलबाला मांय चालौ, भूख सूं तिंवाळा आवै।''

''अेकर थम यार...। कीं उडीक करां, स्यात ओजूं कुणई गमछा वाळा आय जावै, नींतर कॉलोनी मांय जायनै ठाह लगास्यां।'' छोटकियौ छोरौ बोल्यौ।

वै कीं ताळ बैठ्या उडीकता रैया। पण वांनै घणी ताळ उडीक कोनी करणी पड़ी। पांच-सात मिनट मांय तीन आगै अर दो माणस लारै आवता दीस्या। दो जणा तौ सिर माथै

गमछौ बांध्यां तावड़ी रौ जाबतौ कर राख्यौ अर बीजा तीन, मोढां माथै गमछा मेल राख्या हा। दोनूं छोरा ऊभा हुयग्या, वां ओपरा मांणसां रै नैड़ै आवण री उडीक करता थका।

''भाईजी, कुण चालतौ रैयौ... ?''

''क्यूं, थां टाबरां नै के मतळब ? परै जावौ।'' वै तीनूं जणा आपरी बतळावण मांय घलतै विघन सूं रीसाणा हुयग्या अर आगीनै बधग्या। पण छिणेक ताळ पछै गमछा लियां तीन बीजा माणस वांरै नैड़ा पूग्या...।

''भाईजी, माईत कित्तीक औस्था लेयली ही ?''

''औस्था तौ लाडी अस्सी पार कर लीन्ही। डैण भरयौ-पूरौ कड़ूंबौ लारै छोडग्यौ है।''

वै आं बेडोळा अर अणजाण छोरां कांनी घणौ गिनार नीं करयौ, पण चालता थका पड़ूत्तर तौ दीन्हौ। इत्तौ पड़ूत्तर छोरां नै घणौ हौ। जिकी जाणकारी वांनै चाईजै ही वा मिलगी ही। वां माणसां रै आगीनै टुरतां ई दोनूं नाचा-कूदी करता थका आपसरी गळबांथी करै हा।

''राधिया, अबै बेगा ई वांरै लारै हुय जावां। बगतसर घर रौ ठाह लाग जावै, नींतर हांडता फिरस्यां। अजै तांणी आपरलै बासवाळा नै ई स्यात ठाह कोनी लाग्यौ।''

''हां यार! सगळा टींगर मेड़ी कनै बावळा हुयोड़ा फिरै। आपणै दे पट्टी, भाजलै!''

वै दोनूं उभाणै पगां पाणीवारै जावणियां रै खोजांखोज लारै हुयग्या। भादवौ अबकै कमती बरस्यौ हौ। जेठ महीनै जैड़ी करड़ी लाय बरसै ही। स्यात सुरजी फगत वां माथै छतरी तांण दीन्ही ही, तद ई वांनै तावड़ौ नीं बाळै हौ। आस रै पंखां सूं वै दोनूं टाबर उड्या जावै हा। वांरी भूख अर तिरसा नीं जाणै कठै गयी परी।

दसेक मिनट ई हुया हा। आंतरै सूं अेक सांतरी कोठी आगै भेळप दीसी। अबै वांरा पग हवळै-हवळै आगै बधै हा। कोठी सूं पचासेक पांवडा आंतरै वै दोनूं अेक नीमड़ै तळै बैठग्या। वठै सूं साव-सुभट दीसै हौ कै चलावै री छेकड़ली घड़ी आय पूगी है। बैंडबाजौ देखनै वांरै उणियारै मुळक उडार खावै ही। बैकुंठी सजायोड़ी देखनै वै अबै पुख्ता कर लीन्ही कै मेळै रै खरचै रौ सरंजाम हुयग्यौ। अरथी कोठी मांय गयोड़ी ही। सगळी भीड़ रै तावळ ही, क्यूंकै सुरजी सिर ऊपरां बळै हौ। तावळ तौ आं दोनूं छोरां रै ई ही, पण कारण दूजौ हौ। डैण री छेकड़ली जातरा में अबै घणी जेज नीं ही, वै ऊभा हुया अर भीड़ रै नैड़ै पूग्या।

''अरे चूनिया! वौ देख... भाण को...। इणनै टाळ बीजा तौ कठैई लुक्योड़ा कोनी है ?'' चांणचकै ई छोटकियौ छोरौ अेक टींगर नै देखनै हवळै-सीक बोल्यौ। वौ छोरौ ई तकै हौ कै कद अरथी बारै नीसरै!

''थूं चिंत्या मतना कर, इणनै तौ सलट लेस्यां। वौ घणी हुंस्यारी दिखाई तौ सपीड़ घाल देवूंला।'' बडौ भाई नैहचौ दिरावतौ बोल्यौ, वीं बगत छोटकियै रै डील में आपूंआप ठाडाई वापरगी।

''हर कहोजी हर कहो... राम नाम सत्त है... सत्त बोल्यां मुगत...'' रा हेलां रै साथै-साथै कांधिया कोठी रै दरूजै सूं बारै नीसर्या। भीड़ चाल पड़ी, कांधियां रै लारै। कड़ूंबै रा सुपातर अर मेळजोळ वाळा पुसब उछाळै हा। अेक जणै रै हाथ में रेजगी री थैली ही। अबकै

वौ मुट्ठी भरनै रेजगी उछाळी। रेजगी चुगण खातर दोनूं छोरा ताचकनै भीड़ मांय जा पड़्या। रेजगी चुगण खातर भीड़ छोरां नै जिग्यां देय दीन्ही। दो-तीन बरियां रेजगी उछाळीजी। दोनूं भाई हिड़कायोड़ा-सा भीड़ रै मांय पड़ै हा। चिलकता पईसां नै चुगै हा अर गोजिया मांय ठूंसै हा। तीजै छोरै रै पईसा कमती पांती आया। जियां ई वौ नेड़ै आवतौ, दोनूं जणा आडा हुय जावता कै ठेलनै परै कर देवता। इयां लखावै हौ जाणै तीन गंडक हाडकां खातर राड़ करै हा। अेक बास रा गंडक अेकै कांनी हुय जावै तद बारलै बास रै गंडक रै भोरा ई पांती आया करै।

पुसब अर रेजगी उछाळणौ बेगौ ई ढबग्यौ। भीड़ अणथम्यां, आपरी गति सूं आगीनै बधै ही। पण छोरा ढबग्या। वै भीड़ सूं लारै ई रैयग्या। वै जाणै हा कै वांरौ काम हुयग्यौ! ओपरै बास रौ तीजौ छोरौ ई ठाह नीं कद भाग छूट्यौ। दोनूं भाई बठैई अेक नीमड़ै तळै थमनै गिणती करण खातर गोजियां सूं रेजगी बारै काढी। रिपियै अर दो रिपिया नै अळगा-अळगा करनै गिणती सोरी हुवै। लारली बरियां री गिणती वांनै चेतै है। दोनुवां रा रळायनै सित्यासी रिपिया हुया हा।

''अरे राधिया, आं मांय दो रौ सिक्कौ तौ अेक ई कोनी है। धोकौ हुयग्यौ आपणै साथै। अरे... अेक रा ई नवोड़ा सिक्का पांच-सात ई है। अेक अर आठानी रौ ठाह ई नीं लागै। बरोबर ई दीसै। अै देख, घणकरी आठान्यां ई है रे...। तोल रै भाव रेजगी ल्याया है अमीरजादा! हरामजादा धोकौ कर्‌यौ रे, आपणै साथै।

''आं आठान्यां रौ के करां, भाईड़ा! अै तौ बजार मांय चालै ई कोनी!''

बडै भाई कनै कैवण खातर कीं नीं हौ। पसेव सूं तर अर भूखौ-तिरस्यौ वौ अबै साचाणी बावळौ-सो लखावै हौ। वौ पसवाड़ै पड़्या दग्गड़ दोनूं हाथां मांय चक्या अर बोलावणी करती भीड़ रै लारै भाज्यौ जकी अबै घणी आंतरै हुयगी ही। वौ आपरी सगळी तागत लगायनै भाठा बगावतौ रैयौ अर गाळ्यां ठोकतौ रैयौ, ''...अरे अमीरजादै री औलादां... थांनै बेगीज मौत आवैगी... कमीणां...! म्हे तौ मर्‌ज्योड़ा हां पण थे ई बेगा मरस्यौ...!''

छोटकियौ भाई अबै समझग्यौ हौ, वौ ई आपरी तागत सूं भाई साथै भाज्यौ। आसै-पासै घूर्‌यां मांय सुस्तावता गंडक अजका हुवता परै हुयग्या।

छेकड़ली-जातरा री बोलावणी रा सुर अबै मांदा सुणीजै हा। अरथी रै लारै चालतै मिनखां नै पूठपाछै हुवण वाळै अेकलपखी घमसांण रौ ठाह ई नीं लाग्यौ।

❖❖

सावित्री सदन, सी-122, अग्रसेन नगर
चूरू (राजस्थान) 331001
मो. 9414350848

वाजिद हसन काजी

वाजिद हसन रौ जलम 24 सितंबर 1971 नै हुयौ। लारला कीं समै सूं आप राजस्थानी में लगोलग लिख रैया है। केई पत्रिकावां में आंरी कवितावां छप चुकी है। अेम.अे., बी.अेड., अदब माहिर तांई भण्योड़ा वाजिद हसन प्रारंभिक शिक्षा विभाग में उर्दू अध्यापक है। आप नुंवी सोच-समझ सूं बदळतै बगत नै आपरी कवितावां में दरसावण री आफळ करै।

ठिकाणौ : फातिमा कार्नर, मोहल्ला लायकान, किला री घाटी, जोधपुर-342002

लावौ अर सबद

खदबदै लावौ
धरती रा गरभ मांय
जोवै कमजोर पड़तां
बारै उमड़'र
सै कीं खतम करण सारू
आफळै
आभै तांई पूगण सारू
मिळ ई जावै
कोई कमजोर पड़त
बणावै केटर
पण बारै आवतां ई
बैवण लागै
पिघळ'र नीचै कानी
ईयां ई
खदबदीजै सबद
म्हारै ई मगज में
उंतावळ करै
बारै आय'र
कागद माथै मंडण री
सै कीं बदळ देवण सारू
केटर बण जावै
म्हारी कलम
बैवण लागै सबद
पण कीं नीं बदळै
धीरै-धीरै
ठंडा हुय'र जम जावै
सबद।

मजलां मारै हेलौ

पाणी
बैवै ऊपरां सूं नीचै
चुपचाप

बणावै आपरौ मारग खुद
आवौ भलांई कितरा ई अटकाव

पण
करै लगौलग आपरौ काम
अर पूग जावै
आपरी मजल तांई
कै सूख'र मेट देवै
आपरौ अैनांण

देवै सीख मिनख नै
चुपचाप लगोलग
आपरौ काम
करियां ई
मिलै मजलां
अर मिटती जावै
अबखायां
आपौ आप

तौ पकड़ गेलौ
मजलां मारै हेलौ।

मन री बात

दिनूंगै
जद निकळूं
घर रै बारै
तौ घेर लेवै म्हनै
मारग रा सरणाटा,
देख म्हनै
सगळा बदळ लेवै
रस्ता।
क्यूं,
आखिर म्हैं
कांई करियौ किणी रौ ?

अच्छा...
अबै नीं बांटूं
भेळौ करियोड़ौ
अनुभव
नीं करूं किणी सूं
मन री बात।

मिरग तिसणा

समंदर
थारौ कितरौ ऊंडौ पेट
पण कांई काम रौ
थारै हिवड़ै मांय भरियौ
कितरौ खार
जे थूं नीं बुझा सकै
किणी री तिसणा

थारै सूं तौ
अै धोरा ई चोखा
जिका देवै तौ है
किणी नै
तिसणा बुझावण रौ अैनांण
झूठौ ई सही
कीं जेज तौ
देवै थ्यावस बटाऊ नै
अर देवै
आगै ई आगै
बधण री हूंस।

नैणां रा बोल

पैली प्रीत
नीं भूलीजै
अेक-अेक पल-छिन
अेक-अेक दिन
बीत्यौ
अेक-अेक बरस ज्यूं।

बात पुराणी होयगी
पण अजै
साव नुंवी है
म्हारी प्रीत
जाणै आज री
इण सायत री
भलाईं नीं दरसायी
थांरै सांम्ही इणनै
पण है म्हनै
पूरौ पतियारौ
कै थे जद ई जाणता
म्हारै मन री बात
अर आज ई जाणौ।
थां भलाईं मत कैवौ
पण थांरा
मिरग री गळांई मुळकता
डाबर नैण
सै कीं कैय देवै
म्हनै,
अर म्हैं सहज सुणलूं
थांरै नैणां रा
अणबोल्या बोल।

प्रभातियौ तारौ

लाखां तारां बिचाळै
प्रभातियौ तारौ
चमकै,
लड़ै-भिड़ै अंधारा रै खिलाफ
चुपचाप।

देवै बटाउवां नै
मारग रा अैनांण
बंधावै धीज
छोटा बुझ्योड़ा
अर निबळा तारां नै
पण
सूरज रौ उजास
अर तेज
मेट देवै उणरी
सगळी खेचळ
तौ ई डिगै नीं
अड़िया रैवै
आपरी जग्यां,

जाणै है कै
सूरज तौ डूब जावैला
पाछौ आवैला
अंधारौ तकैला
छोटोड़ा निबळा
अर बुझता तारा
बटाऊ
उणरै कानी।

फेरूं उम्मीद सूं
बंधावैला वौ
सगळां नै धीज।
⌘⌘

राजस्थानी भासा मान्यता समिति, राजस्थान रा अध्यक्ष अर दिल्ली धरणै रा संयोजक श्री के. सी. मालू सूं ***गौतम अरोड़ा*** *री बंतळ*

मान्यता आंदोलण नै तेज करणौ पड़ैला : मालू

● मालूजी, राजस्थानी भासा आंदोलण रै विगत आप राजस्थानी मान्यता समिति रा अध्यक्ष होवण रै नातै राजस्थानी रै दावै नै किण रूप देखो ?

— देखो सा, राजस्थानी नै मान्यता उण बगत ई मिल जावणी चाईजती ही जिण बगत लारली बार सरकार बाकी भासावां नै आठवीं अनुसूची मांय जोड़ी। राजस्थानी भासा, साहित्य री दीठ सूं सिमरध भासा है। प्राचीन भासा है। इणनै बोलणियां री संख्यां 10 करोड़ रै लगैटगै है। राजस्थानी भासा मांय बहुविध साहित्य है। इण देस मांय स्वतंत्रता आंदोलण मांय भी लोगां नै प्रेरणा देवण मांय राजस्थानी साहित्य री जबरी भूमिका रैयी है।

● जद अस्सी बरसां सूं आंदोलण चाल रैयौ है तो हाल तांई मान्यता नीं मिलण री वजै कांई ?

— देरी रौ कारण आपां खुद हां। आपां खुद बगतसर चेत्या नीं अर जद चेत्या तौ कोई संगठित आंदोलण ऊभौ नीं व्हियौ। राजनीतिक इच्छा-सगती रौ अभाव रैयौ। सरकार अर सांसदां नै विस्वास में लेवण रौ काम भी नीं व्है सक्यौ।

● लारलै दिनां आप लोग दिल्ली मांय धरणौ दियौ, इण धरणै पछै आपनै कांई लखावै अर सरकार रौ रुख अबै कांई है ?

— आपणौ दिल्ली धरणौ घणौ महताऊ अर सफळ रैयौ। सरकार नै आ बात तौ साफ ठाह लागगी है कै राजस्थानी भासा आंदोलण अेक जन-आंदोलण है। सरकार माथै दबाव बण्यौ है, पण आपां नै लगातार सरकार नै चेतावतौ रैवणौ पड़ैला। गृहमंत्री, गृह राज्यमंत्री अर प्रधानमंत्री जी तक आपां री बात पूगी है। वांरौ रुख पॉजिटिव है, पण जद तांई मान्यता नीं मिळै, खाली भरोसै नीं बैठणौ है, बल्कै जागरुक रैवणौ है।

● कोई खास सरकारी दिक्कत या पख ?

— सरकार आ बात साफ करी है कै राजस्थानी अर भोजपुरी नै आ सरकार मान्यता बेगी ई देवैला अर जिकी सरकारी प्रक्रियागत देरी है, वा जरूर है। पण आ बात है कै वै आपां नै कैय देवै कै मान्यता बेगी ई देवांला अर आपां ढीला पड़ जावां तौ पार पड़णौ दोरौ है, जद तांई काम नीं व्है, लारै लाग्यौ रैवणौ है।

● जे राजस्थानी नै मान्यता मिल जावै तौ आपनै कांई लागै, राजस्थानी सरकारी कामकाज री भासा व्है जावैला ?

— देखो सा, आ बात इत्ती सोरी कोनी। राजस्थानी भासा नै व्यवहार मांय लावणी पड़ैला। पढाई-लिखाई मांय राजस्थानी नै जोड़ण सारू सैकंडरी, हायर सैकंडरी स्कूलां अर कॉलेजां मांय राजस्थानी विसय खोलावणौ पड़ैला। दूजी राजभासा बणावण मांय केई अबखायां है, पण काम में लाग्योड़ा रैवां तौ असंभव कोनी।

● आपरै मुजब मान्यता कद तांई मिल सकै अर जे नीं मिली तौ मान्यता समिति रै आंदोलण री आगामी रणनीति कांई व्हैला ?

— यूं तौ इण बाबत कोई अंदाजौ करणौ मुस्किल है, पण आज रै वातावरण नै देखता थकां औ लागै कै बजट सत्र रै पैलां-पैलां राजस्थानी नै मान्यता मिल सकै। पण जे नीं मिळै तौ औ आंदोलण बडै स्तर पर जन आंदोलण रै रूप में आगै बधैला। म्हे लोग गांव-गांव सदस्यता अभियान चला'र पचास लाख लोगां तांई म्हांरी बात पूगावणै री त्यारी करी है। सोसल मीडिया रौ उपयोग भी कर रैया हां अर जरूरत पड़ी तौ आंदोलण और तेज करांला। युवा सगती अर छात्र मोरचौ 'राजस्थान बंद' री त्यारी में है। क्रमिक अनशन अर राजघाट माथै मरणौ-धरणौ भी आंदोलण री कड़ी मांय है। पण औ सब समिति री केंद्रीय कार्यकारिणी आपरी आगली बैठक मांय तै कर संगठित रूप में सांम्ही लावैला। जै राजस्थान। जै राजस्थानी।

● बात-बंतळ-2

राजस्थानी भासा मान्यता संघर्ष समिति रा पूर्व अध्यक्ष अर 2003 रै जयपुर धरणै रा संयोजक भरत ओळा सूं ***गौरीशंकर कुलचंद*** *री बंतळ*

राजस्थानी नै मान्यता इणरौ वाजिब हक : ओळा

● भरत जी, आप राजस्थानी भासा री मान्यता रै दावै नै किण रूप में देखौ ?

— राजस्थानी भासा रौ हजार बरसां सूं बेसी रौ आपरौ इतिहास है। तीन लाख सूं बत्ता ग्रंथ, साढी तीन लाख सबदां सूं बेसी रौ सबदकोस है, खुद रौ व्याकरण है। भासा वैज्ञानिक इणनै अेक सिमरध भासा मानै। स्कूलां, कॉलेजां मांय राजस्थानी विसय पढाईजै। राजस्थानी भासा नै दस करोड़ सूं बेसी लोग बोलै। राजस्थानी भासा, भारतीय भासावां मांय बोलणियां री संख्या री दीठ सूं सांतवै अर विश्व रै मांय सोळवीं ठौड़ माथै है। इण भांत इण भासा सूं आप सवाल ई कीकर खड़ौ कर सकौ कै आप मान्यता रा हकदार हौ के नीं हौ। औ सवाल नीं है, म्हारौ हक है जिकौ आपोआप ईज मिल जावणौ चाईजतौ, पण पीड़ है कै म्हांनै लड़णौ पड़ रैयौ है। औ राजस्थानियां रौ वाजिब हक है। सरकार नै सोचणौ चाईजै कै इण सारू कोई महाभारत नीं मंडै अर म्हांनै म्हांरौ हक मिळ जावै।

● जयपुर धरणा रा आपरा कांई अनुभव रैया।

— जयपुर धरणा री बगत सगळै जिलां मांय मान्यता समिति री इकाइयां ही। विधानसभा माथै पैलौ धरणौ हौ। लोगां मांय अेक उमाव हौ। लोगबाग सगळां जिलां सूं बसां भरीज-भरीज जयपुर में पूग्या। धरणा रै पछै तत्कालीन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत वारता बुलाय'र पूछ्यौ कै आप राजस्थान सरकार सूं इण बाबत कांई चावौ? संघर्ष समिति उण बगत अेक ईज मांग करी कै विधानसभा मांय अेक संकल्प प्रस्ताव पास करवा'र केंद्र सरकार नै भिजवावौ। पछै मुख्यमंत्री जी वादौ कर्‌यौ अर वै इण वादै माथै खरा पण उतरिया अर राजस्थान विधानसभा सूं 23 अगस्त, 2003 नै औ संकल्प प्रस्ताव सर्वसम्मति सूं पारित करीजनै केंद्र सरकार नै भिजवाईज्यौ।

● राजस्थानी भासा री मान्यता मांय देरी रा कांई कारण है।

— आज बजारू जुग है। सरकार सारू इण बजारू जुग मांय कला, संस्कृति, भासा सब सैकंडरी विसय है। सरकार आंनै ज्यादा महताऊ नीं मानै अर ना ई आंरी गिनार करै। बजारू जुग मांय सैं कीं नफा-नुकसाण अर अरथ सूं जुड़्योड़ौ व्है। हर कोई 'इण हाथ दौ, उण हाथ लौ'रै हिसाब सूं चालै। बजार हर चीज नै अरथ अर उत्पाद सूं जोड़ नै देखै। भासा अर साहित्य रौ परिणाम तुरत-फुरत नीं निकळै। इण मांय धीजाई चाईजै। इण सारू राजनेता इणनै लेय'र संवेदनहीण है। सरकार कोई रिस्क भी नीं लेवणी चावै। सगळां नै राजी राखणा चावै। सर्वश्री गुमानमल लोढा, लक्ष्मीमलजी सिंघवी, ओंकारसिंह लखावत, सांसद अर्जुन मेघवाल जिसा लोग आपरी बात संसद मांय राखी है। अर्जुन जी री मैणत घणी सरावणजोग है।

● आंदोलण री विगत री कोई खास बात।

— पैली आंदोलण जमीनी हौ। पछै फेसबुक तांई सिमटण लाग्यौ। पण सोसल मीडिया रै जनजागरण रै मारफत लोग आंदोलण सूं जुड़िया। लारला दस साल मांय नेतृत्व री कमी रै चालतां आंदोलण कमजोर व्हियौ, पण 'दिल्ली धरणा' नै देखनै लागै कै अबै नेतृत्व सई हाथां मांय है। युवा सगती अर छात्र मोरचौ कमान संभाळी है। अबै जे सरकार इणनै टाळै तौ आंदोलण और उग्र व्हैला।

● आगै री कोई रणनीति?

— आंदोलण नै गांव-गांव तांई पूगा रैया हां। तैसील स्तर माथै समितियां रौ गठण चल रैयौ है। युवावां नै भासा अर रुजगार रौ जुड़ाव समझ में आवण सूं युवा घणा जुड़्या है। वांनै आंदोलण रौ नेतृत्व भी सूंपण री त्यारी है। सगळा राजस्थान मांय दो हजार सूं बेसी ग्राम पंचायतां है, बठै काम जारी है। सब ठौड़ समितियां बणावण रा प्रयास है। धरणा-प्रदरसण तेज व्हैला। साहित्यकार ई नीं, सगळा भासाप्रेमी अर छात्र इण बात मानै के आ फगत भासा री नीं, पेट री अर हक री लड़ाई है। आगै 'राजस्थान बंद' भी करियौ जाय सकै। म्हांनै विस्वास है कै सरकार खुद इण बात नै मानै कै भासा री मान्यता री लड़ाई जन-आंदोलण है अर राजस्थानी भासा री संवैधानिक मान्यता रौ मामलौ अबै ज्यादा दिन तांई टाळ्यौ नीं जाय सकै।

⌘⌘

● *अनुसिरजण*

लीलाधर मंडलोई

हिंदी रा ख्यातनाम कवि-आलोचक अर संपादक लीलाधर मंडलोई रौ जलम जलमाष्टमी 1953 नै गुढी (छिंदवाड़ा) मध्यप्रदेश में हुयौ। *चावी पोथ्यां* : अेक बहुत कोमल तान, रात-बिरात, मगर अेक आवाज, देखा-अदेखा, क्षमायाचना, लिखे में दुक्ख, काल बांका तिरछा, मनवा बेपरवाह, दिल का किस्सा, अर्थ जल, दाना-पानी, कविता का तिर्यक, कविता के सौ बरस आद। केई मान-सम्मान अर पुरस्कार जिण मांय खास है— पुश्किन, शमशेर, नागार्जुन, रज़ा, रामविलास शर्मा (सगळा कविता खातर), कृति सम्मान, साहित्यकार सम्मान (दिल्ली राजधानी, साहित्य अकादमी) आद। दूरदर्शन रा महानिदेशक रैया मंडलोई अबार भारतीय ज्ञानपीठ रा निदेसक अर ज्ञानोदय मासिक पत्रिका रा संपादक है।

ठिकाणो :166 दूसरी मंजिल, कैलाश हिल्स, नवी दिल्ली-65

मोबाइल : 9818291188 ई मेल : leeladharmandloi@gmail.com

भासा-1

म्हैं लिखूं
उण भासा में

जिकी
ओळखै म्हनै।

भासा-2

जिकी भासा सपनां रै साथै-साथै चालै
जियां काल देख्यौ म्हैं सपनौ
बरसै ही लाय आभै सूं

आज म्हारी भासा औ बिरवौ लगावै।

भासा-3

ऊदई रौ घर
कमाल रौ रूपाळौ
पण कित्तौ अबखौ

रचू खुद री कविता
दीमक री भासा मांय।

फूल

कदैई जिकौ कैयौ हुवैला-
हाडका नै फूल

उण ईज देख्यौ हुवैला—
मिनख मांयलौ फूल।

सूरज री सीध में

कान है पण कान कोनी देवै
हाथ है पण हाथ कोनी देवै
आंख है पण आंख कोनी देवै
मन है पण मन कोनी देवै

काम माथै जावती छोरी
जावै काम माथै
सूरज री सीध मांय।

बिना किणी कवि रै

घणौ अबखौ हुवै कविता मांय
जीसा नै
जियां रा जियां ई लिखणौ

लिखूं जद
अेक सबद— जीसा
म्हारा चाळीस बरस
पड़ जावै ओछा

जीसा री छिंया
जीसा रौ हेत
जीसा री मौत
कोनी उतर सकै
कविता मांय सागण ढाळै

जीसा कवि रै मांय है
जियां रा जियां
पूरण हा जिण ढाळै बै

म्हारौ अंतस भरियौ-पूरौ
जीसा सूं

जीसा खुद अेक मुकम्मल कविता हुवै
बिना किणी कवि रै मांड्यां।

मंतर

घणी कामेड़ी हुवै मौमाख्यां
फूलां सूं पराग
अर मकरंद करै भेळौ
खुद री टांगां बिच्चै बणी
उण टोकरी मांय
जिकी दीसै कोनी

मौमाख्यां त्यार
करै है सैत
अर करै रुखाळी
बारलै हमलै सूं उण री

अलेखू दुसमियां बिचाळै घिरयोड़ा हां आपां
अर रुखाळी ई कोनी कर सकां

आपां मौमाख्यां सूं सीख्यौ कोनी औ मंतर।

कपाळ-किरिया

मा री चिता
बस चटकती लकड़ियां री गूंज ही
बगत हुयग्यौ हौ
पंडित जी कैयौ
'कपाळ-किरिया'
अर झला दियौ अेक बेडोळौ लंबौ मोटौ बांसड़ौ

ठाह नीं कांई हुयौ
म्हैं झाल लियौ
भाई रौ हाथ
अर बोल्यौ चाणचक
'जरा'क हळकै हाथ सूं'
अर मींचली आंख्यां।

जातरा

अेक लोटौ
अेक डोरी
अेक अंगोछौ
अेक कांबळ
अेक पोटळी
अर अेक डांग
अब कोई पण जातर दौरी कोनी।

लड़ूं तौ हूं पण

लड़ूं तौ हूं पण
पूरी तरै लड़ण री गत मांय कोनी

जीवूं तौ हूं पण
पूरी तरै जीवण री गत मांय कोनी

मरूं तो हूं पण
पूरी तरै मरण री गत मांय कोनी

मा जीवै अर अबै चालीजै कोनी
अर परिवार...

माफी चावूं म्हारै पाखती दूजौ मारग कोनी
थोड़ा'क भळै उडीकौ।

लाय

भिड़ै— सबद सूं सबद
म्हारी मेज माथै

अेक चिणखी-सी उठै
अर कविता लाय दांई
पसर जावै

लाय नीं तौ कविता क्यांरी...।

म्हैं देवूंला हिसाब

म्हैं देवूंला हिसाब
खुदरी मूरखता, हेकड़ी, घमंड अर लोभ रौ

म्हारै ऊंडै बसियौ हौ कोई सक
जिण माथै म्हैं करतौ रैयौ अणूतौ पतियारौ

म्हैं मरणौ कोनी चावतौ हौ उण रै हाथां
जद कै जीवणौ थारै भेळै कितरौ अबखौ

आ अेक सीधी-सरल बात है कै
थे कोनी चावौ म्हनै

म्हारै खातर का डूब मरण री बात
जद कै थे म्हारा इत्ता खास

म्हैं अबोलौ हूं अेक रूंख दांई
इण रो मतलब ओ कोनी कै
म्हैं कोनी हुय सकूं थारै दांई

हुवणौ थारै दांई डूब मरै जैड़ी बात हुवैला।

जीवण बाबत

सगळी तजबीज कर्‌यां ई
धरती सूं पचै कोनी
नामुदार प्लास्टिक

अर अबै परमाणु कचरै रै स्वाागत मांय
कित्तौ कसमसीजै औ राज

कूंपळां अर फूलां रौ तौ कैवणौ ई कांई
छोटिया टाबरां रै जीवण बाबत
सोचणौ कद बंद हुयौ।

पाव ब्रेड री बात

जद कै बा रौ रैयी है
म्हैं कोनी करूंला पाव ब्रेड री बात
मा दोय दिन जूनी रोटियां रै
बासी सूक्योड़ै टुकड़ा नै
गिला करैला गुड़ रै पाणी मांय
अर उडीकैला कै बावड़ जावै
बासी सूका टुकड़ा सूं
जरा'क पीलपीलौ लखाव पाव ब्रेड रौ
निजरा लुकोवतौ भाळतौ रैसूं मा भेळै
लुगाई री बापड़ी आंख्यां में
म्हैं दर ई कोनी करूंला
पाव ब्रेड री बात
म्हारी जेब सूं साव परबारी है
औ है महीनै रौ छेहलौ दिन।

कार्बन मोनोऑक्साइड

कठै सूं आवै इत्ती
कार्बन मोनोऑक्साइड
कै बरफ पिघळै
बगत सूं पैली

धंसकै डूंगर होळै-होळै

होळै-होळै खूटै जीवण।

गद्य कवितावां

कै लूण रोटियां मांय

दिनूगै-सिंझ्या... समदर सूं उठै धोळौ धप्प धूंवौ... पण समदर सूं कोनी आवै खांसता-खांसता बेदम हुवणवाळा री अवाजां... अबकी दाण मा सूं कैवूंला कै चाल परी म्हारै साथै अर पो परी देख रोटियां कै जठै धूंवौ हुया करै अणथाग, पण कोनी हुवै ऊंडै तांई हिला देवण वाळी खांसी... मा जद पोसी रोटियां बां मांय समदर रौ सुवाद हुवैला अर कित्तौ किफायती अर स्वादू हुसी रोटियां रौ पोणौ। कै लूण रोटियां मांय मत्तै ई पूगैला... समदर माथै खासां आपां जद रोटियां... पूगैला सुवाद ई आपी-आप मांय रो मांय अर आपां सुवाद रा समदर हुय जासां अेक दिन... अेक दिन...।

हत्यारा उतरग्या क्षीरसागर मांय

(अेक)

म्हैं हमेस नेहछै री नींद लेवतौ। अर अबै जागूं जाणै नींद मांय। डरावणा सपनां मांय डूब्योड़ी है रातां। म्हैं हत्यारां नै देखूं सपनां मांय। बां रा चैरा अडोळा दीसै कोनी। बस बां रौ हुवणौ मैसूस करूं जाणकारां जिसौ। बै चैरा-मौरां सूं तौ चोखै घरां रा खावता-पीवता दीखै। बां पाखती जोरदार मोटर-कारां है। बै अमूमन मोटी-मोटी कोठ्यां सूं निकळ'र आवै। बां रै लारै चालणियां री जमात है। जिका नवी-नवी सकलां मांय हरेक ठौड़ हाजिर हुवै। बै हथियारां सूं सज्या-धज्या। बां री आत्मा रौ पाणी सूकग्यौ। कारण कै बै रिपियां रै जोर सूं उण हरेक जिनस नै खरीदण नै आमादा है जिण मांय पाणी हुवै। अर राज खुद आपरै ढंग-ढाळै लागै इण बौपार मांय हत्यारां रौ साखी बणग्यौ। म्हारै इण सुपनै में जिकौ बिना किणी स्टिंग ऑपरेशन रै सूझ रैयौ है, म्हनै कंठां तांई डर मांय डूबौ देवै। म्हैं चीसाळी मारणी चावूं पण आवाज जाणै कंठां मांय अड़गी। सपनौ म्हनै लियां भाजै च्यारूंमेर। अर म्हैं देखूं बौ जिकौ कदैई देख्यौ कोनी। अर इण ढाळै तौ दर ई कोनी देख्यौ। म्हनै लखावै म्हारी आत्मा लोहीझ्याण।

(दोय)

म्हैं तौ बंधक हौ बां रौ। बियां तौ ओ सपनौ हौ। म्हैं बां रौ लारौ करियौ। कै जाण सकूं बौ साच जिकौ आखै जीवण सूं घणौ भारी। पाणी कमती हुवतौ अडाणै कठैई। उण खातर म्हैं न्हासूं कै बौ कित्तौ बचै का फेर बच जावैला पूरौ। पीढियां री हेमाणी लियां। म्हैं पूगूं अेक मा री कूख मांय। बठै अेक भ्रूण है। खुद रै भार रै तिरेसठ फीसदी पाणी मांय। उणी'ज सूं प्राण उण रा। म्हैं कियां ओळखूं कै बौ उणी मात्रा मांय है। अर बच जावैला जापतैसर। जे पाणी कमती हुयौ। तौ बौ कित्तौ बच्योड़ौ हुवैला जद कै जूण पासी। म्हैं पूगूं अबै खुद री देही मांय। बठै उण नै हुवणौ चाइजौ दोय-तिहाई का तीन-चौथाई। अर लोही रै प्लाजमा मांय च्यार फीसदी हुवणौ जरूरी है। अर कोशिकावां मांय सोळै फीसदी। कांई इत्तौ पाणी सही-सही मात्रा मांय हुवैला। अठीनै म्हैं केई बीमारियां सूं घिरग्यौ हूं, अबै सपनै मांय म्हैं हूं डागदर री टेबल पाखती। बौ जांच करै अर परची मांय सावचेतियां लिखै। मोटै आखरा मांय बौ मांडै 'शुद्ध पानी' अर सेवन माथै जोर देवै, आ जाणता थकां कै अबै फगत बच्यौ प्रदूसित पाणी। बजार रै दावां नै गळै लटकायां म्हैं भाजू शुद्ध पाणी खातर। अर कूड़ माथै अेतबार करूं कै जिकौ साच दांई पुरसीजै। कै अबै इण मांय अकूत वौपार। बस शुद्ध रौ विग्यापन है अशुद्ध। पाणी मांय बौ हुसी, औ पतियारौ कोनी हुवै अर डर सूं कांपण लागूं।

❖❖

उल्थाकार परिचै

राजस्थानी रा कवि-आलोचक अर संपादक डॉ. नीरज दइया रौ जलम 22 सितम्बर 1968 नै रतनगढ़ (चूरू) में हुयौ। 'निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में आधुनिकता बोध' विषय माथै पीअेच.डी.। प्रकासित अनुवाद : पंजाबी काव्य-संग्रै / अमृता प्रीतम 'कागद अर कैनवास' (2000), हिंदी कहाणी-संग्रै / निर्मल वर्मा 'कागला अर काळौ पाणी' (2002), चौबीस भारतीय भासावां रै कवियां री कवितावां रौ राजस्थानी अनुवाद 'सबद नाद' (2012), गुजराती जातरा-वृत्तांत / भोलाभाई पटेल 'देवां री घाटी' (2013) अर मोहन आलोक रै पुरस्कृत राजस्थानी कविता-संग्रै रो हिंदी अनुवाद 'ग-गीत' (2004)। केई मौलिक अर संपादित पोथ्यां प्रकासित। आलोचना पोथी 'बिना हासलपाई' चर्चित। साहित्य अकादेमी, नवी दिल्ली सूं 'जादू रौ पेन' माथै बरस 2014 रौ 'बाल साहित्य पुरस्कार', राजस्थानी भासा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर सूं 'बावजी चतुरसिंहजी अनुवाद पुरस्कार' आद केई पुरस्कार, मान-सम्मान मिल्योड़ा।

ठिकाणौ : सी-107, वल्लभ गार्डन, पवनपुरी, बीकानेर-334003
मोबाइल : 9461375668 ई मेल- neerajdaiya@gmail.com

मुकुट मणिराज

घट्टी

सूरज-चांद-सा पाटां बीच्चै
दळ्या-पीस्या नौ लख तारा
गरणगट करता ढीली होई
'मानी' का अपराध में
झेलती री लोढ्यां की मार
मोटा पीसणा की सजा में
'पंछाती' री बार-बार पेट
पूरा जीवट सूं अजमायौ
घर-धरियाणी का पुणचां को जोर
ऊंका चूड़ां की खणक अर
मीठा-मीठा गीतां की रुणक में
मलाती री अपणी अणहद राग
जीं नै सुण'र पूरौ घर
काढतौ रैयौ मीठी-मीठी नींद
घर-धरियाणी की लेरां जागी
अर लेरां सोई।
भूखी तिसाई रैय'र
भरती री जगती रौ पेट
चालती री चालती री अर
घसती री पण नीं जाणी
थाकबौ, नटबौ, रूसबौ
कोरी अेक घाघरी पैर'र
काढली बगत, मौज में
पण 'बगत' कुणकौ होतौ आयौ छै

जीं कै बिना अेक दिन
काढणौ पड़ै छौ भारी
नीं बळै छौ घर में चूल्हौ
धधक उठै छी पेटां की आग
आज बा जर्जर अेक खूण्यां में पड़ी
खा री छै धूळौ / तकदीरां की मारी
डूबती आंख्यां सूं देखरी छै, अपणी मौत
बापड़ी डोकरी— घट्टी।
❖❖
'वृद्धि', विजयवीर स्टेडियम रै कनै, बालापुरा
कुन्हाड़ी, कोटा-324008

जेबा रशीद

दुस्मण दोस्त यादां

थारी यादां रा फूल
दिन री हलचल मांय
व्यस्तता री धूप में
कुमळीज जावै है
पण रातां रै सरणाटां मांय
बादळां ज्यूं
म्हारै ख्यालां मांय
छाय जावै है।
दुस्मण जैड़ी यादां
बेचैन कर जावै है
उणां सूं डरूं हूं
पण सच्चाई आ है कै
यादां ई म्हनै
दोस्त री नांय सुलावै है
थांनै सपना में बुलावै है
थारै सूं मिलावै है।
❖❖
151, चौपासनी चुंगी चौकी रै लारै, जोधपुर (राज.)
मो. 9829332268

हरदान हर्ष

अेक और सदी

न बणी रा पखेरू जाणै
न गांव रै चंदर नै पतौ कै
टिक-टिक करतां आयगी
अेक और सदी।

मझ-सावण
मरु-तिरसौ
गीगलौ धोरां बैठ्यौ
आभौ ताकै।

निबळा घरां रात अंधारी
पेट कै गांठ
अधनागौ आजतांई
धरती पोढै आकास ओढै।

लूण तेल लकड़ी री जुगत करतौ
गांव नीं जाणै
नुंवी सदी रा जसन में
पांच सितारा होटल रौ छकणौ।

सत्ता रा विदेसी गळियारा'क
पच्छिम री ढाळ ई
कामयाब व्हैली
अठै या नुंवी सदी।
❖❖

अे-306, महेश नगर
जयपुर-302015
मो. 9785807115

● *पोथी-परख*

डॉ. नीरज दइया

म्हां जिकौ भेळै देख्यौ, देखजौ अबै अेकला

पारस अरोड़ा री ओळखाण कवि-संपादक अर उल्थाकार रूप चावी-ठावी। माणक अर बीजी पत्र-पत्रिकावां रै मारफत आपरौ करियोड़ौ उल्थौ फुटकर अर विसेसांकां मांय देख सकां, इणी ओळ मांय साहित्य अकादेमी खातर हिंदी कवि मंगलेश डबराल रै पुरस्कृत काव्य-संग्रै 'हम जिसे देखते हैं' रौ राजस्थानी उल्थौ 'म्हां जिकौ देखां' (2013) आप करियौ। अठै औ पण उल्लेखजोग है कै कवि राजेश जोशी री लांबी हिंदी कविता 'समरगाथा' रौ उल्थौ ई आपरौ सांम्ही आयौ। अठै औ पण कैवणौ पड़ैला कै लारला बरसां राजस्थानी मांय उल्थै पेटै साहित्य आकादेमी सांतरौ काम करियौ।

जद कोई खिमतावान कवि-संपादक उल्थौ करै तद मूळ कवि री ऊरमा नै उल्थाकार सूं बेसी कवि-उल्थाकार उजागर करै। राजस्थानी कविता रा कीरत-थंब पारस अरोड़ा 'राजस्थानी अेक' सूं ओळख रै मारग पूग'र 'झळ', 'जुड़ाव' अर 'काळजै में कलम लागी आग री' जिसी काव्य-पोथ्यां अर 'अंवेर' जिसै संकलन रै संपादन सूं आपरी भासा-सिल्प भेळै काव्य-मुहावरै रौ अेक रुतबौ कायम करियौ। मंगलेश डबराल री आं कवितावां नै बांचती बगत इयां लागै जाणै कवि डबराल राजस्थानी-कवि रौ रूप धारण कर लियौ हुवै, आ इण उल्थै री खासियत कैयी जावैला।

'हम जिसे देखते हैं' रौ उल्थौ 'आपां जिकौ देखां' री जागा उल्थाकार 'म्हां जिकौ देखां' करियौ। अठै गौर करण री बात है कै उल्थै मांय जद किणी सबद नै किणी सबद खातर काम लेवां तद उण लारै ऊंडी दीठ ई हुया करै। आपां अर म्हां मांय झीणौ आंतरौ देख्यौ जाय सकै। अेक तो आप सूं आपां बण्यौ है अर म्हैं सूं म्हां। आपां अर म्हां मांय निजता री बात करां तौ ई म्हां मांय बेसी आत्मीयता अर अपणायत रौ भाव देख सकां। असल मांय पूरै कविता-संग्रै मांय कवि आसै-पासै री चीजां नै अपणायत अर आत्मीयता रा भाव लियां देख रैयौ है अर आपरै देख्योड़ै दीठावां नै सबदां रै मारफत कवितावां मांय दरसावतौ जाणै आंख्यां सांम्ही न्यारा-न्यारा चितराम प्रगट करिया हुवै।

गद्य कवितावां पेटै कमती कवियां काम करियौ है, इण संग्रै मांय हिंदी अर भारतीय कविता-जातरा मांय हुवता बदळाव अर केई प्रयोग ई देख्या जाय सकै। कविता रै सीगै गद्य

कवितावां तौ संग्रै मांय मिलै ईज पण पद्य जिकौ गद्य सूं बिना किणी खेल का चमत्कार रै होळै-होळै कविता रै रूप मांय प्रगट हुवै वौ ई उल्लेखजोग कैयौ जावैला। 'कीं बगत सारू' कविता रौ औ अंस देखां— *कीं बगत सारू म्हैं कवि हौं / फाटी-जूंनी कवितावां री मरमत करतौ थकौ/ सोचतौ थकौ के कविता री जरूत किण नै है।*

कविता रै रचाव मांय कवि जिकी मरमत करै वा मरमत उल्थै मांय बेसी करणी पड़ै। हरेक भासा री आपरी सबदावली अर कविता रौ मुहावरौ हुया करै, उणनै बचावतां थकां उल्थाकार बीचलौ मारग काढै। इण नै इयां पण कैय सकां कै कविता रौ उल्थौ दूजै जलम दांई हुवै जिण मांय नुंवै जलम मांय लारलै जलम री आतमा वास करै।

कवि री आपरी दुनिया हुवै अर उण दुनिया नै देखण-परखण रौ ढंग। कवि डबराल री कवितावां मांय मधरौ व्यंग्य ई घणै मरम भेळै उजागर हुवै। दाखलै सारू बात करां कविता 'बारै' बाबत। आ कविता मांय कवि रै कविता लिखण पेटै लिखीजी है अर वां चीजां अर दीठावां रौ बखाण ई कवि करै जिकौ उण रै कविता रचाव रै बगत उणां सांम्ही हुवै, पण कवि बिना किणी सवाल करियां सेवट वां दाखला नै पाछौ बतावतौ मांडै कै उण री कविता मांय आंख्यां सांम्ही जिकी चीजां है, वै क्यूं नीं। इणी मरम नै कविता खुद रौ अंधारौ खोलै— *जद रोसणी हुई / पड़छांवळी दीसी / खुद सूं मोटौ दीस्यौ / खुद रौ अंधारौ।*

असल मांय कवि आपरै आसै-पासै रै अंधारै माथै का दिन थकां नीं दीसती चीजां नै दरसावण खातर ई कविता मांडै। कवि दादोसा, बाबोसा, मां अर खुद री फोटू देखतां थकौ कविता मांडै। दूजै पासी कीं विसय लेय'र कवितावां मांडै जियां— 'कागद', 'नींद', 'सपना', 'टाबरपणौ', 'चांद', 'निरासा', 'आंसू', 'हासियौ' आद।

किणी रचना नै सबद-सबद साधता कोई ओळी साधीजै, पण सबद री ओळख कर उण नै किणी ओळी मांय राखणौ अर उण रै जोड़ मांय लगोलग मेळ रा सबदां रौ साथौ मिलणौ दीसै जितौ आसान कोनी हुया करै। कविता 'सात ओळियां' इणी मरम नैं दरसावै— *मुस्किल सूं हाथै लागी अकेक आसान ओळी / अकेक दूजी बेडोळ-सीक ओळी में समायगी / वा तीजी तूटी-भागी किसम री ओळी नै धक्कौ दियौ / इण तरै मुस्किल-सीक डिगमिगावती चौथी ओळी बणी / जिकी खाली झूलती थकी पांचवीं ओळी सूं उळझी / वा छटपटायनै छठी ओळी नै सोधी जिकी आधीज लिखीजी ही / सेवट सातवीं ओळी में पड़ग्यौ ओ सगळौ मळबौ।* आ कविता आज रै जुग मांय भासा रै बरबाद हुवण रौ दीठाव कमती सबदां सखरै रूप परोटै।

किणी रचना री सफलता इण बात मांय पण जाणीजै कै उणनै बांचती वेळा उण रै आगै रौ दीठाव-बखाण बांचणियां रै सोच मांय आगूंच नीं आय जावै। खासकर गद्य कवितावां मांय कवि किणी ओळी नै कैवतौ-कैवतौ ठा ई नीं लागण देवै अर कठै सूं कठै पूग जावै। नुंवी अर न्यारी न्यारी दीठ रा दरसाव राखती आं कवितावां मांय उल्थाकार री खासियत आ कै जिण मूळ भासा अर बुणगट नै बचाय'र आं नै राजस्थानी मांय लावण रौ कारज इण ढाळै करीज्यौ है कै कठैई कोई सबद का ओळी रड़कै कोनी।

संग्रै मांय छेहली कविता रै रूप 'पाछी घड़त' नांव सूं सोळा कवितावां इण टीप साथै मिलै— '' अै कवितावां परबत रा खासा इलाकां रा अैड़ा लोकगीतां सूं प्रेरित है जिकां नै लोक-कवितावां कैवणौ वत्तै सही व्हैला पण औ वांरौ उल्थौ कोनी।'' डबराल री आं ओळ्यां अर जिकी कवितावां किणी रौ उल्थौ कोनी उण रौ औ उल्थौ बांचणौ नुंवौ लखावै। अै जिकी नै लोक कवितवां कैवण री बात लिखीजी है, साव नवी कवितावां रै जोड़ री कवितावां लखावै। आं कवितावां रौ मूळ जिका बांच्यौ है वां नै आ जाणता जेज नीं लागैला कै उल्थै मांय कवितावां री आतमा साकार हुवै, इण उल्लेखजोग काव्य-संग्रै रै सरावणजोग उल्थै सारू उल्थाकार-कवि-संपादक पारस अरोड़ा नै घणा-घणा रंग।

मंगलेश डबराल का कोई पण कवि रौ काम बांचणियां नै अेक दीठ देवणौ हुया करै। वा दीठ जिण सूं संवेदनसील कवि आपरै आसै-पासै रै जगत नै देखै-परखै अर रचाव मांय रंग भरै। इण पोथी रै पूरै पाठ पछै लखावै जाणै कवि कैय रैया हुवै— म्हां जिकौ भेळै देख्यौ, देखजौ अबै अेकला।

पोथी : म्हां जिकौ देखां (मंगलेश डबराल, उल्थौ : पारस अरोड़ा) संस्करण 2013
प्रकासक : साहित्य अकादमी, नई दिल्ली / मोल 100 रिपिया / पाना-84

❖❖

सी-107, वल्लभ गार्डन
पवनपुरी बीकानेर (राज.) 334003
मो. 9461375668

● *रपट*

दिल्ली में गूंजी राजस्थानी री मान्यता री दहाड़

राजस्थानी भासा री संवैधानिक मान्यता सारू संसद भवन रै कनै जंतर-मंतर माथै 6 मई नै दिल्ली में दहाड़ सुणीजी। जंतर मंतर माथै आयोजित इण अेक दिन रै सांकेतिक धरणै में लगैटगै पांच हजार सूं बेसी राजस्थानी भासा रा हिमायती हिस्सौ लियौ। मीरांबाई रै मेड़तै सूं 15 मार्च नै मायड़ भासा राजस्थानी छात्र मोरचा रै प्रदेस स्तरीय जळसै में हुयै 'दिल्ली धरणै' रै निरणै मुजब मोरचै अर राजस्थानी भासा मान्यता समिति री भेळप में दिरीज्यै इण धरणै रौ जबर असर हुयौ अर प्रधानमंत्री अर गृहमंत्री राजस्थानी भासा री मान्यता सारू आंदोलन करण वाळां रै प्रतिनिधि मंडल नै खुद बुलावौ भेज्यौ अर ज्ञापन सांभळ्यौ। साथै ई औ आस्वासण पण दियौ कै मानसून सत्र में राजस्थानी-भोजपुरी अर भोटी भासा नै संविधान री आठवीं अनुसूची में लावण सारू संसद में प्रस्ताव राखीजैला। बिहार चुणाव री प्रक्रिया रै चालतां मानसून सत्र में औ प्रस्ताव नीं आय सकौ पण संसद रै सीतकालीन सत्र में औ प्रस्ताव राख्यौ जाय सकै है।

जंतर-मंतर माथै अेक दिन रै सांकेतिक धरणै रै इण जळसै री खास बात आ रैयी कै आखै राजस्थान सूं राजस्थानी में अेम.अे., नेट-स्लेट अर पीअेच.डी करचोड़ा छात्र अेकठ हुया अर ढोल-तासां रै ढमाकै सागै वां आपरी इण धरणै में हाजरी मंडायी। इण भांत राजस्थानी भासा री मान्यता रौ सवाल अबै युवा अर रुजगार रौ सवाल बणग्यौ है।

इण सूं पैलां 3 अप्रैल नै विंडसर प्लेस, नई दिल्ली में बीकानेर रा सांसद अर्जुनरामजी मेघवाळ रै रैवास माथै इण धरणै नै मूरत रूप देवण सारू पैली बैठक राखीजी। इण बैठक मांय राजस्थान संस्था संघ रा अध्यक्ष सुरेश खंडेलवाल, वरिष्ठ साहित्यकार देवकिशन राजपुरोहित, अ. भा. मारवाड़ी युवा मंच रा राष्ट्रीय अध्यक्ष रवि अग्रवाल, मायड़ भासा राजस्थानी छात्र मोरचा रा प्रदेस संयोजक गौरीशंकर कुलचंद्र, माणक रा संपादक पदम मेहता, मारवाड़ी युवा मंच रा कोषाध्यक्ष पवन कुमार गुप्ता सामल हुया। इण बैठक में 6 मई नै दिल्ली रै जंतर-मंतर माथै धरणौ देवण रौ निरणै लिरीज्यौ।

धरणै री त्यारी बाबत 16 अप्रैल नै जयपुर मांय फेरूं बैठक राखीजी। बैठक मांय राजस्थानी भासा मान्यता समिति, राजस्थान रौ गठन करीज्यौ। धरणै री आयोजन समिति मांय के. सी. मालू नै संयोजक, सुरेश खंडेलवाल नै सह संयोजक, रवि अग्रवाल, डॉ. अमरसिंह राठौड़, प्रो. कल्याणसिंह शेखावत, पदम मेहता, हेमजीत मालू, डॉ. राजेन्द्र बारहठ, देवकिशन राजपुरोहित, मोहन कटारिया, डॉ. सुखदेव राव, डॉ. अशोक गहलोत, गौतम अरोड़ा, गौरीशंकर

कुलचंद्र, मुकेश गोदारा, सत्यनारायण राजपुरोहित, सवाईसिंह चारण, सुरेन्द्र लांबा री समिति सारू कोर कमेटी बणी अर सांसद अर्जुनराम मेघवाळ रै संरक्षण अर मारगदरसण मांय धरणौ लगावण री तेवड़ी। इण बैठक मांय रूपरेखा अर जिम्मेदारियां तय करीजी। औ तै करीज्यौ कै धरणै रौ संयोजन जयपुर अर दिल्ली री कोर कमेटी (कंट्रोल रूम) करसी। छात्र मोरचा नै धरणै रौ प्रचार-प्रसार, जनजागरण, युवावां नै दिल्ली सारू ले जावण री मोटी जिम्मेदारी सूंपीजी।

छात्र मोरचौ आखै राजस्थान मांय धरणै नै सफळ बणावण सारू कार्यकर्तावां सूं टीम वर्क करवायौ। मारवाड़ मांय मोरचा रा संरक्षक डॉ. उम्मेदसिंह सेतरावा, डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित, डॉ. अशोक गहलोत, गौतम अरोड़ा, रामसिंह राठौड़ आद धरणै री त्यारियां सारू आखै मारवाड़, उदयपुर संभाग मांय डॉ. राजेन्द्र बारहठ, शिवदानसिंह जोलावास दिल्ली धरणै रै प्रचार-प्रसार री कमान संभाळी। इण भांत राजस्थानी भासा मान्यता समिति, राजस्थान कानी सूं थरपीज्यै इण धरणै मांय आखै भारत में थापित राजस्थानियां री न्यारी-न्यारी संस्थावां सूं जुड़्योड़ा मायड़ भासा रा हेताळु, साहित्यकार अर जनप्रतिनिधि पूग्या। राजस्थान सूं लगैटगै 65-70 बसां जंतर-मंतर पूगी। धरणै रौ संयोजन के. सी. मालू करियौ। आखै राजस्थान मांय प्रिंट मीडिया, इलैक्ट्रानिक मीडिया, सोशल मीडिया माथै 6 मई रै दिल्ली धरणै नै जन आंदोलन बताईज्यौ। इणरौ प्रभाव औ व्हियौ कै राजस्थान सरकार रा संसदीय कार्यमंत्री राजेन्द्र राठौड़ 28 अप्रैल नै केबिनेट बैठक में राजस्थानी भासा री मान्यता रौ समरथन करियौ। धरणौ सुबै 11 बज्यां सूं सिंझ्या 4 बज्यां तांई चाल्यौ।

धरणै नै कोटा सांसद ओमजी बिड़ला, राजस्थान रा शिक्षा राज्यमंत्री वासुदेवजी देवनानी, महाराष्ट्र सरकार रा मुख्य सचेतक राज के. पुरोहित, जोधपुर शहर विधायक कैलाश भंसाली, विधायक जोगाराम पटेल, राजनेता लोकेन्द्रसिंह कालवी, पूर्व विधायक जोगेश्वर गर्ग, राजस्थानी भासा मान्यता समिति रा अध्यक्ष के. सी. मालू, देवकिशन राजपुरोहित, प्रवक्ता डॉ. अमरसिंह राठौड़, सुरेश खंडेलवाल, पदम मेहता, डॉ. अर्जुनदेव चारण, पद्मश्री चंद्रप्रकाश देवल, प्रो. देव कोठारी, लक्ष्मणदान कविया, डॉ. भरत ओळा, ओम पुरोहित 'कागद', डॉ. हरिमोहन सारस्वत रूंख, मोहन आलोक, प्रो. कल्याणसिंह शेखावत, डॉ. सत्यनारायण सोनी, मालचंद तिवाड़ी, दुलाराम सहारण, रामसिंह राठौड़, डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित, श्याम महर्षि, पृथ्वीराज रतनू, डॉ. राजेन्द्र बारहठ, रामस्वरूप किसान, विनोद स्वामी, ओम नागर, घेवरचंद सारस्वत, डूंगरराम गेदर, मनोज स्वामी संबोधित करियौ।

इण अैतिहासि विसाल धरणै नै सफळ बणावण में केई राजस्थानी संगठनां रौ योगदान रैयौ। दिल्ली मांय बस्यै प्रवासी राजस्थानी संगठन, राजस्थान संस्था संघ महताऊ भूमिका निभायी। धरणै सारू पूगणिया कार्यकर्तावां रै ठैरण अर खावण-पीवण री वैवस्था करी। राजस्थानी भासा मान्यता समिति, राजस्थान रौ टीम-वर्क, कुसल निरदेसन, संयोजन धरणै नै सफळ बणायौ। छात्र मोरचा रा कार्यकर्ता जी-जान सूं पूरी ताकत सागै आखै राजस्थान रा भासा हेताळुवां नै अेकठ करण रा जाझा जतन करिया। इण अैतिहासिक धरण सूं नुंवी आस जागी है

कै आवण वाळा दिनां मांय बेगी ई राजस्थानी संविधान री आठवीं अनुसूची मांय सामळ बेगी होवैला। राजस्थानी भासा री संवैधानिक मान्यता रै आंदोलन सूं छात्र-वरग अर जनप्रतिनिधियां सागै आखै भारत री सांस्कृतिक संस्थावां रौ जुड़णौ अेक महताऊ संकेत है। इण भांत औ आंदोलन अबै जन आंदोलन रौ रूप लेय चुक्यौ है।

श्यामसुंदर भारती री काव्यकृति रौ विमोचन

जोधपुर। उर्दू, हिंदी अर मातृभासा राजस्थानी रा ख्यातनाम कवि श्यामसुंदर भारती रै काव्य-संग्रै 'अेक दीवौ अंधारा रै खिलाफ' रौ विमोचन कार्यक्रम जोधपुर रै नॉर्थ वैस्टर्न रेलवे अेम्पलाइज यूनियन रा सभागार में गुरुवार 30 अप्रेल 2015 नै संपन्न हुयौ। इण कार्यक्रम रौ बडेरचारौ मानीता कवि-आलोचक डॉ. अर्जुनदेव चारण करियौ। सिरै मिजमान इतिहासकार प्रोफेसर जहूरखां मेहर हा।

जोधपुर रा नामी साहित्यकारां, रंगकर्मियां अर मातृभासा राजस्थानी रा हेताळुवां सूं राणोराण भर्‌यै सभागार में जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय रै राजस्थानी विभाग रा अध्यक्ष डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित आपरौ परचौ पढता थकां श्यामसुंदर भारती रै व्यक्तित्व अर कृतित्व माथै उजास न्हाकतां कैयौ कै 40 बरसां सूं वै लगोलग साहित्य री मून साधना में लीन है। इण साधना में वै साहित्य री सगळी विधावां में काम करियौ है जिकौ सरावणजोग है।

मानीता साहित्यकार आईदानसिंह भाटी रै पत्र रौ वाचन युवा साहित्यकार वाजिद हसन काजी करियौ। आईजी आपरै परचै मांय भारती जी रै काव्य में राजस्थानी संस्कृति अर परंपरावां नै जीवती राखण री खेचळ अर गंभीर कोसिस नै सरायी। सिरै मिजमान जहूरखां मेहर आपरा विचार राखतां कैयौ कै भारती जी राजस्थानी लोकोक्तियां अर लोकथावां नै कविता में ढाळ'र जग रै सांम्ही राखै, औ काम घणौ महताऊ है।

आपरै अध्यक्षीय उद्‌बोधन में डॉ. अर्जुनदेव चारण कैयौ कै कविता किणी भासा री हुवौ, वा अेक प्रार्थना है जिकी कवि आपरै हिवड़ै सूं अरज करै।

इण अवसर सभागार में उर्दू रा चावा शायर शीन काफ़ निज़ाम, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी रा पूर्व अध्यक्ष रमेश बोराणा, वरिष्ठ साहित्यकार न्यायमूर्ति मुरलीधर वैष्णव, मदन मोहन परिहार, माणक रा संपादक पदम मेहता, हाशम खां झाड़ोद, केसरीमल शर्मा 'विमल', डॉ. सत्यनारायण, कैलाशदान, दिनेश सिंदल, मोईनुद्दीन काज़ी, डॉ. पद्‌मजा शर्मा, अनिल अनवर, अब्दुल नईम सिलावट, रज़ा मोहम्मद, गुलज़ार अहमद, शिक्षा अधिकारी शब्बीर हुसैन, दीपा परिहार, छगनराज राव, अेज़ाज खान पठान रै साथै सैकड़ूं साहित्य प्रेमी मौजूद हा। सभागार रै बारै भारती जी रा प्रशंसक अमजद खान 'शादाब', नूरूल हसन काजी, ओमप्रकाश गोयल, जहूर अली रंगरेज, अशफाक़ फौजदार वांरी सिरजण जात्रा री प्रदरसणी लगाई। कार्यक्रम रौ संचालन मज़ाहिर सुल्तान करियौ। सागर भारती आभार जतायौ।